DIGANTAR

Education for Equality and Justice

वार्षिक प्रतिवेदन

2019–20

www.digantar.org

वार्षिक प्रतिवेदन : 2019–20
दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति

निर्देशन	: रीना दास
रिपट लेखन	: हेमन्त शर्मा
कम्पोजिंग	: राजू गुर्जर
लेआऊट	: ख्यालीराम स्वामी

© दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति

संपर्क

दिगन्तर
शिक्षा एवं खेलकूद समिति
टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियान रोड
जगतपुरा, जयपुर–302017 राजस्थान

दिगन्तर

वार्षिक प्रतिवेदन रिपोर्ट

2019–20

अनुक्रमणिका

1. पृष्ठभूमि 04

2. दिगन्तर विद्यालय एक परिचय 05

2.1 बच्चों का नामांकन एवं वर्तमान स्थिति 08

2.1.1 शाला में बच्चों का नया प्रवेश

2.1.2 बच्चों का स्तरानुसार समूहीकरण

2.1.3 बच्चों का समूहानुसार विवरण

2.2 विद्यालय स्तर पर आयोजित गतिविधियां 09

2.2.1 बाल पंचायत गठन

2.2.2 राष्ट्रीय पर्व एवं उत्सव

2.2.3 बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम

2.2.4 बाल फिल्मों का प्रदर्शन

2.2.5 बच्चों के साथ हस्तकार्य

2.3 अकादमिक बैठकें 24

2.3.1 शेयरिंग बैठक

2.3.2 महासभा बैठक

2.3.3 कार्यक्रम समन्वय बैठक

2.3.4 व्यवस्थात्मक कार्य समीक्षा बैठक

2.4 अकादमिक कार्यशालाएं एवं गतिविधियां 28

2.4.1 ग्रीष्मकालीन कार्यशाला

2.4.2 शीतकालीन कार्यशाला

2.4.3 विद्यालय माहोल व व्यवहार पर आधारित कार्यशाला

2.4.4 किशोर बालिकाओं के साथ संवाद

2.4.5 प्राथमिक उपचार

2.4.6 पुस्तकालय का शिक्षण में उपयोग

2.4.7 शिक्षण सामग्री निर्माण

2.4.8 शैक्षिक प्रगति रपट लेखन

2.5 समुदाय सहयोग एवं भागीदारी 36
2.5.1 महिला अभिभावक बैठक
2.5.2 विद्यालय प्रबंधन समिति एवं अभिभावक बैठक

2.6 चयन, प्रशिक्षण एवं नियुक्ति 38

2.7 प्रकाशन 39
2.7.1 बच्चों की पत्रिका बातूनी
2.7.2 अन्य पत्रिका में बच्चों का प्रकाशन

2.8 शैक्षिक भ्रमण 40
2.8.1 बच्चों का शैक्षिक भ्रमण
2.8.2 शिक्षक एक्सपोजर विजिट

2.9 अन्य संस्थाओं को शैक्षिणक मदद व भागीदारी 42

2.10 इंटर्नशिप हेतु विद्यालय आये छात्र एवं छात्रायें 44

2.11 चुनौतियां और लक्ष्य 45

3. शिक्षा विमर्श 46
3.1 पत्रिका की पहुंच और फोकस
3.2 प्रसार और सदस्यता
3.3 पत्रिका के लिए चुनौतियां

4. संदर्भ सहायता इकाई 49

5. फाउण्डेशन कोर्स 51

6. आय–व्यय बैलेंस शीट 60

❑❑❑

1

पृष्ठभूमि

दिगन्तर (दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति) राजस्थान सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1958 के तहत पंजीकृत एक स्वयंसेवी संस्था है। शुरुआत में दिगन्तर दो शिक्षकों और बच्चों के एक छोटे समूह के साथ आरम्भ किया गया था। यह विद्यालय बच्चों के लिए बिल्कुल मुफ्त था। इसके लिए वित्तीय मदद एक परिवार द्वारा निजी तौर की गई थी। दिगन्तर विद्यालय के प्राथमिक लक्ष्यों में पहला, मूल्यों के साथ–साथ अकादमिक रूप से शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाना। दूसरा, बच्चों में आपसी सहयोग, स्वतत्रंता, स्वयं सीखते हुए शिक्षण के तौर–तरीके विकसित करना सीखना व उपलब्धियां पुलंकित कर देने वाला हो। सामान्यतया प्रेरित करने वाले तथ्य रटना, भय और प्रतियोगिता सचेतन रूप से अलग हों।

दिगन्तर शुरुआत में 20–25 बच्चों और दो शिक्षकों का एक छोटा स्कूल था। बच्चों की उपलब्धियां का मूल्यांकन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का समग्र हिस्सा था। बिना किसी परीक्षा के यह विद्यालय संचालित था। लेकिन बच्चों को आगे शिक्षा में प्रवेश हेतु आवश्यक माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा आयोजित सैकेण्डरी व सीनियर सैकेण्डरी की परीक्षाओं में शामिल करवाया जाता है। इस छोटे समूह के रूप में यह स्कूल शुरुआती 10 वर्षों (1978 से 1988) तक जयपुर शहर के बीच संचालित किया गया। इन 10 वर्षों में शिक्षकों को प्राथमिक शिक्षा के सैद्धान्तिक और व्यवहारिक पहलुओं का अध्ययन करने व समझने का सुअवसर मिला। इस छोटे से साहस ने प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे समूहों और लोगों का ध्यान आकृषित किया। इससे एक ओर शिक्षा के अभिप्राय और उसका समाज से नियमित संबंध को ढूँढने का काम शुरू हुआ। दूसरी तरफ, शिक्षा और समाज के विकास के लिए काम कर रहे अन्य समूह के साथ परस्पर बातचीत भी आरम्भ हुई। इस तरह दिगन्तर विद्यालय से शिक्षा में काम कर रहे लोगों का लघु व व्यापक संबंध स्थापित हुआ। धीरे–धीरे इस स्कूल में प्राथमिक शिक्षा दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों का आकार उभरने लगा। यह स्कूल ग्रामीण बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के विशेषाधिकार को ज्यादा जरूरत के रूप में देख रहा था। अतः शिक्षा में काम करने वाले कुछ और लोग भी इससे जुड़े और राजस्थान सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1958 के तहत ''***दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति***'' के नाम से संस्था का पंजीकरण हुआ। इसके संचालन के लिए जयपुर के दक्षिण–पूर्व के गांवों को कार्यक्षेत्र हेतु चुना गया।

दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार है :

- बच्चों को बेहतर शिक्षा मुहैया कराने के लिए विद्यालय स्थापित व संचालित करना।
- प्राथमिक शिक्षा में खोजे सभी पहलुओं को व्यवहार में लाना।
- इसके लिए अन्य संस्थाओं का सहयोग करना।
- सामन्यतया समाज को शिक्षा की इस दिशा में आगे बढ़ाना।

❑❑❑

2

दिगन्तर विद्यालय : एक परिचय

दिगन्तर विद्यालय जयुपर जिले की सांगानेर पंचायत समिति के खोह नागोरियान गांव व भावगढ़ बंध्या गांव की ढाणियों में चल रहे हैं। जिनमें कुल 259 बच्चे (पूर्व प्राथमिक से माध्यमिक स्तर तक) सीखने–सिखाने का काम कर रहे हैं।

विद्यालय में बच्चों के साथ शैक्षिक काम करते हुए हमने प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर तक उपयोग हेतु शिक्षाक्रम, पाठ्यपुस्तकें और अन्य शिक्षण सामग्री विकसित की हैं। माध्यमिक स्तर के लिए भी प्रयासरत हैं। हमारे स्कूलों में शिक्षकों को पाठ्यपुस्तकों के साथ–साथ जरूरतानुसार अन्य शिक्षण सामग्री और पुस्तकें इस्तेमाल करने की पूरी स्वतंत्रता है। बेहतर शिक्षण के लिए दिगन्तर विद्यालयों में NCERT व SCERT की पुस्तकें भी उपयोग में ली जाती हैं। विद्यालय दिगन्तर मुख्य कार्यालय से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जहां भावगढ़ गांव के आस–पास की 28 ढाणियों से बच्चे विशेषतया बालिकाएं आती हैं।

दिगन्तर विद्यालय के उद्देश्य

- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वजनीकरण के प्रयासों में मदद करना, उपलब्ध कराना।
- आरंभिक शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक नीतियों व सिद्धान्तों को दिशा देने में मदद करना।
- शिक्षकों के शैक्षणिक विकास के लिए शिक्षाक्रम और शिक्षण सामग्री विकसित करना।
- आरंभिक शिक्षा के क्षेत्र में सिद्धान्त और व्यवहार के बीच के अन्तर को कम करना।
- शिक्षा से वंचित बच्चों को विशेषकर बालिकाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना।
- स्कूल व समुदाय के बीच विश्वासपूर्ण संबंध बनाना, स्कूल के संचालन और प्रबन्ध में समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना।

विशिष्ट उद्देश्य

(अ) वर्तमान विद्यालय को गुणवत्ता के लिहाज से बेहतर बनाना

- सीखने–सिखाने के संदर्भ में।
- पढ़ाने के तरीकों के संदर्भ में।
- शिक्षण सामग्री एवं उपयोग के संदर्भ में।
- आंकलन के तरीकों में।
- व्यवस्था (भवन, पानी व रोशनी) के संदर्भ में।

(ब) बालक बालिकाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण माध्यमिक स्तर का स्कूल विकसित करना।

(स) शाला संचालन में समुदाय की भागीदारी बढ़ाना।

- शाला समुदाय बैठकों को नियमित करना।
- स्कूल कार्य योजना की शेयरिंग करना।
- शिक्षा समिति का गठन करना।

कार्यक्रम क्षेत्र एवं संरचना

कार्यक्षेत्र			समूह					नामांकन			शिक्षक		
पंचायत समिति	गांव	ढ़ाणी	पूर्व प्राथमिक	प्राथमिक	उच्च प्राथमिक	माध्यमिक	कुल	बालिकाएं	बालक	कुल	महिला	पुरुष	कुल
01	02	28	02	04	03	02	11	165	94	259	06	05	11

दिगन्तर अकादमिक एवं व्यवस्थात्मक सम्बलन इकाई

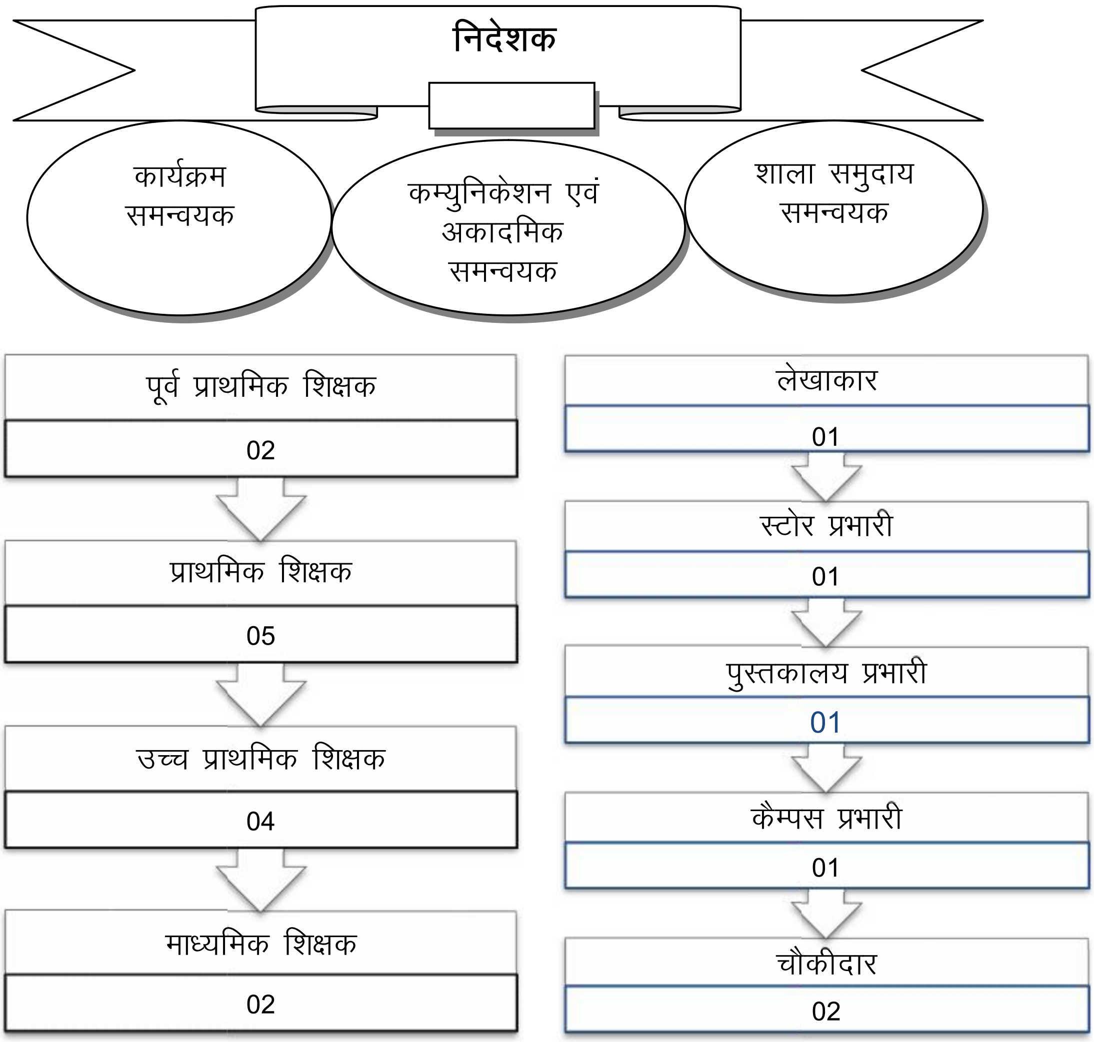

कार्यकर्ताओं भूमिका एवं जिम्मेदारियां

क्रम	पद	संख्या	कार्य एवं जिम्मेदारियां
1.	निदेशक	01	सभी कार्यक्रमों को दिशा–निर्देश प्रदान करना, बजट की व्यवस्था करना और अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों से संस्था के अन्दर और बाहर समन्वयन स्थापित करने का कार्य करना।
2.	कार्यक्रम समन्वयक	01	कार्यक्रम को दिशा प्रदान करना। दिगन्तर शालाओं में शिक्षा की गुणवत्ता बनाये रखना। कार्यक्रमों में आ रही दिक्कतों को समझना व दूर करने की दिशा में आवश्यक कार्य करना। बच्चों के शिक्षण कार्य में मदद करना।
3.	कम्युनिकेशन अकादमिक समन्वयक	01	शिक्षकों की अकादमिक मदद करना तथा उनकी समस्याओं को पहचान कर निवारण हेतु कार्य करना। बच्चों की शिक्षण में मदद। संस्था में बजट व धन उपार्जन हेतु कार्य करना। कार्यशालाओं का समन्वयन करना।
4.	शाला समुदाय समन्वयक	01	समुदाय के लोगों का शाला से अधिक से अधिक जुड़ाव व शिक्षा में समुदाय की भागीदारी बढ़ाना। शाला व्यवस्था संबंधी कार्यों का निष्पादन करना और शिक्षकों की अकादमिक मदद करना।
5.	शिक्षक	13	बच्चों को सीखने–सिखाने में मदद करना, उनके लिए सामग्री की व्यवस्था करवाना और अच्छा स्कूल चलाने में सहयोग करना।
6.	स्टोर प्रभारी	01	संस्था के लिए आवश्यक सामग्री बाजार से खरीदना, समस्त सामान का लेखा–जोखा रखना और आवश्यकतानुसार स्टोर से सामग्री देना, वापस जमा और सामान की सार–संभाल करना।
7.	लेखाकार	01	विद्यालय में लेखा–जोखा तथा कार्यालय से संबंधित कार्य करना।
8.	पुस्तकालय प्रभारी	01	पुस्तकालय का सुव्यवस्थित एवं सुचारू रूप से संचालन करना। शिक्षकों व बच्चों के लिए पत्रिकाएं और पुस्तकें उपलब्ध करवाना।
9.	कैम्पस प्रभारी	01	कैम्पस संबंधी कार्य, जिसमें कैम्पस की सुरक्षा, समस्त चीजों का मैन्टिनेन्स देखना और सार–सम्भाल रखना।
10.	चौकीदार	02	शाला परिसर की सुरक्षा व्यवस्था बनाये रखना और व्यवस्था संबंधित कार्यों में मदद करना।
	कुल	23	

2.1

बच्चों का नामांकन एवं वर्तमान स्थिति

2.1.1 शाला में बच्चों का नया प्रवेश

दिगन्तर विद्यालयों से आगे के अध्ययन हेतु बच्चों के चले जाने पर या उपलब्ध वित्तीय सहयोग के अनुसार बच्चों की संख्या कम होने पर नये बच्चों को प्रवेश दिया जाता है। प्रवेश के इच्छुक बच्चों के अभिभावकों को विद्यालय के रजिस्टर में पहले बच्चों के नाम दर्ज करवाना होता है। जिसमें वरीयता सूची के आधार पर बच्चों को नया प्रवेश मिलता है। कई बार विद्यालय में प्रवेश चाहने वाले बच्चों की सूची के अनुसार जगह कम होती है तो अभिभावकों को उनके बच्चों को दूसरी स्कूलों में प्रवेश दिलवाने को लेकर बातचीत भी की जाती है। प्रत्येक वर्ष मई माह के शुरुआत में प्राथमिक से उच्च प्राथमिक स्तर तक के बच्चों को प्रवेश दिया जाता है। इस वर्ष विद्यालय में प्रवेश हेतु प्रतीक्षा सूची वाले बच्चों के अभिभावकों बुलाकर उनके साथ बातचीत की गई और 99 बच्चों को प्राथमिक स्तर में, 56 बच्चों को उच्च प्राथमिक स्तर में, 21 बच्चों को माध्यमिक स्तर में और एक बच्चे को उच्च माध्यमिक स्तर के लिए प्रवेश दिया गया।

2.1.2 बच्चों का स्तरानुसार समूहीकरण

दिगन्तर का मानना है कि सभी इंसानों की सीखने की गति समान नहीं होती है इसी को मध्य नजर रखते हुए दिगन्तर विद्यालय में कक्षा की बजाय समूह में शिक्षण कार्य किया जाता है। जिसमें बच्चे साल दर साल कक्षा की पायदान चढ़ने की बजाय क्षमता/दक्षता अनुरूप अलग–अलग समूह में अध्ययन करते हुए आगे बढ़ते हैं। दिगन्तर विद्यालय में शिक्षकों को एक ही समूह के बच्चों को आरम्भ से प्राथमिक स्तर तक का शिक्षण कार्य कराने पूरी स्वतंत्रता होती है। शिक्षकों द्वारा इस प्रकार किये गये शिक्षण कार्य की जुलाई माह में सभी बच्चों की प्रगति रिपोर्ट तैयार करनी होती है और उसी प्रगति रिपोर्ट अनुसार प्राथमिक व उच्च प्राथमिक समूह के बच्चों का स्तरानुसार समूहीकरण किया जाता है। इस प्रकार नये प्रवेशित बच्चों और पहले से अध्ययनरत बच्चों की समूह में शिक्षण व्यवस्था की जाती है।

2.1.3 बच्चों का समूहानुसार विवरण

दिगन्तर विद्यालयों में कुल 259 बच्चे (बालिकाएं व बालक) अध्ययनरत हैं। इन बच्चों को कुल 11 समूहों में विभाजित किया गया है। जिसमें 06 समूह प्राथमिक, 03 समूह उच्च प्राथमिक व 02 समूह माध्यमिक के हैं।

विस्तृत विवरण सहित तालिका

विद्यालय का स्तर	समूह संख्या	बच्चे			शिक्षक		
		बलिकाएं	बालक	कुल	महिला	पुरुष	कुल
पूर्व प्राथमिक	02	19	16	35	2	0	02
प्राथमिक	04	70	46	116	01	03	04
उच्च प्राथमिक	03	50	20	70	02	01	03
माध्यमिक	02	26	12	38	01	01	02
कुल	11	165	94	259	06	05	11

2.2

विद्यालय स्तर पर आयोजित मुख्य गतिविधियां

विषयवार शिक्षण कार्य के अलावा दिगन्तर विद्यालयों में समय–समय पर अन्य अकादमिक गतिविधियां भी की जाती हैं। विद्यालय के वार्षिक गतिविधि कलैण्डर में इन अकादमिक गतिविधियों (जयन्तियां, प्रदर्शनियां, बाल मेला, राष्ट्रीय पर्व व अन्य आयोजनों) को शामिल किया जाता है। ताकि इनका बच्चों को अपने जीवन में महत्त्व व जानकारियों को समझने, एक–दूसरे से सीखने और समझ को विकसित करने में पर्याप्त अवसर मुहैया हो सके। सामुहिकता का भाव बढ़ाने और सीखने में आन्नद के लिए इस वर्ष 02 जयन्तियां, कुछ बाल फिल्मों का प्रदर्शन और सभी राष्ट्रीय पर्वों का पूरी तैयारी के साथ आयोजन किया गया।

2.2.1 बाल पंचायत का गठन

दिगन्तर विद्यालय में व्यवस्था संबंधी वे सभी निर्णय, जिनसे बच्चे प्रभावित होते हैं उनमें बच्चों की राय व भागीदारी सुनिश्चित की जाती है और बच्चों की राय को महत्त्व भी दिया जाता है। इसलिए दिगन्तर विद्यालय में बाल पंचायत का गठन किया जाता रहा है। विद्यालय में बाल पंचायत गठन के पीछे मुख्य विचार इस प्रकार हैं :

- बच्चों में लीडरशिप विकशित हो सके।
- बच्चों में स्वयं निर्णय लेने की काबलियत आये।
- तार्किक ढंग से विचार करना।
- अपने निर्णयों के प्रति सजगता, जिम्मेदारी एवं सचेत रहना।
- बच्चों में लोकतांत्रिक प्रक्रिया में आस्था, विश्वास एवं भरोसा विकसित करना।
- सामूहिक रूप से निर्णय ले पाना तथा निर्णयों में सक्रिय भागीदारी निभाना।
- लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से परिचय एवं उसके बारे में समझ विकसित करना।
- शाला की व्यवस्थाओं एवं संचालन में बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करना।
- अपने विद्यालय एवं चीजों के प्रति संवेदनशील और उत्तरदायी बनना। इत्यादि।

उपरोक्त बिन्दुओं को मध्यनजर रखते हुए दिगन्तर विद्यालयों में प्रतिवर्ष "***बाल पंचायत*** " का गठन किया जाता है। इस सत्र में भी दो बार बाल पंचायत का गठन किया गया, जिसमें बच्चों ने अपनी भागीदारी को बेहतर तरीके से निभाया।

बाल पंचायत द्वारा निर्वाचित सदस्यों की प्रत्येक शनिवार को बैठक होती है। जिसमें पिछली बैठक में लिए गये निर्णयों के क्रियान्वयन की समीक्षा करना, बच्चों द्वारा उठाई समस्याओं/सुझावों पर चर्चा करना, उनकी समस्याओं हेतु समाधान तलाशना और जो निर्णय अभी तक लागू नहीं हुए उन्हें लागू करने की नीति बनाना व लागू करना। बाल पंचायत के निर्वाचित सदस्यों के निर्णयों की अवेहलना करने वाले बच्चों व शिक्षकों के बारे में निर्णय लेने का काम भी किया जाता है। इस प्रकार निर्वाचित सदस्यों बैठकों की बातचीत व निर्णयों को एक रजिस्टर में लिखकर उनका लेखा–जोखा भी रखा जाता है।

इस प्रकार तैयार रजिस्टर के निर्णयों को शनिवार की सभा में शाला के सभी बच्चों के समक्ष रखा जाता है। उन पर चर्चा एवं बातचीत कर अन्य बच्चों की राय ली जाती है। बच्चों द्वारा की गई टिप्पणियों एवं सुझावों को तार्किक दृष्टि से देखकर आवश्यकतानुसार निर्णय में बदलाव भी किया जाता है। और दो तिहाई बहुमत यदि निर्णय के पक्ष में होता है तो उन्हें लागू किया ही जाता है।

इस प्रकार बाल पंचायत का मूल काम अपनी शाला की व्यवस्थाओं की बेहतरी में मदद करना है। इससे विद्यालय संचालन में बेहतरी के लिए निर्णय लेना, उसको लागू करना और निर्णयों की पालना की जिम्मेदारी सभी की हो जाती है। निर्णयों की अवेहलना होने पर जवाबदेही भी सभी की बन जाती है। और इस प्रकार निर्णयों में बच्चों की स्वयं की भागीदारी होने से जवाबदेही और बढ़ जाती है। फिर वे निर्णय थोपे हुए नहीं बल्कि स्वयं के लिए स्वयं द्वारा निर्णय होते हैं।

दिगन्तर विद्यालय में अब तक बाल पंचायत के छः–छः माह के तेईस कार्यकाल समाप्त हो चुके हैं। इनके सदस्यों का शाला में व्यवस्था बनाने व समस्याओं के समाधान में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। बाल पंचायत के संविधान को मध्यनजर रखते हुए इस सत्र में भी विद्यालय में बाल पंचायतों का गठन किया गया।

प्रथम बाल पंचायत का गठन : 2 व 3 अगस्त, 2019

- 2 व 3 अगस्त, 2019 को दिगन्तर विद्यालय भावगढ में पूर्व बाल पंचायत के 6 माह पूरे होने के उपरान्त 22वीं बाल पंचायत का गठन किया गया।
- इसके लिए दो दिन पूर्व प्रत्येक समूह से नामांकन सूची लेकर वोटर सूची तैयार की गई। जिसमें बच्चों व उनके माता–पिता का नाम, S R नम्बर, प्रवेश तिथि आदि तथ्यों सहित वोटर सूची संबंधित शिक्षकों और चुनाव आयोग को दी गई और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत एक दिन पूर्व अलग–अलग समयान्तराल में आवेदन भरने, चुनाव चिन्ह आंवटित करने, नाम वापसी और प्रचार का समय भी बच्चों को दिया गया।

बाल पंचायत चुनाव हेतु 2 अगस्त को विद्यालय में पूरी तरह चुनावी माहौल रहा। बाल पंचायत गठन की इस प्रक्रिया में विद्यालय के सभी बच्चों ने काफी उत्साह से भाग लिया। बच्चों ने प्रत्येक स्तर पर अपने समूह के उम्मीदवारों का प्रचार किया। अन्य बच्चों के साथ अपनी कार्य योजना शेयर की। चुनावी प्रचार की बातचीत में बच्चों द्वारा अपने चुनावी मुद्दे कुछ इस प्रकार रखे गए।

- शाला व्यवस्थाओं में सुधार लाना।
- लंच समाप्त होने पर देरी से आने वाले बच्चों की आदतों में सुधार किया जायेगा।
- बच्चों को सफाई रखने एवं कचरा डस्टबीन में ही डाले इसके प्रति सचेत किया जायेगा।

बाल पंचायत चुनाव के दिन काफी जोश के साथ विद्यालय में छोटे–छोटे समुह में बच्चों का चुनाव प्रचार अभियान दिखाई दिया। चुनाव आयोग जिसमें पूर्व बाल पंचायत के सदस्यों द्वारा मिलकर चुनाव सामग्री, मत–पेटियां, मतदाता सूची, फाइलें, बूथ नं. व पेपर आदि तैयार किये।

दिनांक 3 अगस्त को प्रातः सभा में सभी बच्चों के सम्मुख चुनाव के औचित्य तथा चुनाव आयोग द्वारा तय की गई व्यवस्था से अवगत कराया गया। जिसमें मतदान की समय सीमा, बूथ नम्बर की स्थिति और शिक्षकों एवं बच्चों की जिम्मेदारी इत्यादि के बारे में विस्तार से बताया गया। जैसे–जॉनल मजिस्ट्रेट, रिटर्निंग अधिकारी, पुलिस व्यवस्था तथा अन्य कुछ बच्चों को संवाददाता आदि की जिम्मेदारी दी गई।

शुरुआत में पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चों को मतदान डालने को लेकर थोड़ी समस्या हुई। लेकिन शिक्षकों और चुनाव ड्यूटी में उपस्थित बच्चों ने अपनी जिम्मदारी निभाते हुए उनकी मदद की। चुनावी माहौल में कई जगह संवाददाता प्रत्याशियों व मतदाताओं के साक्षात्कार लेते हुए नजर आये। संवाददाताओं ने चुनाव प्रक्रिया व्यवस्थित चलने की पुष्टि की।

संवाददाताओं द्वारा समय–समय पर कितना प्रतिशत मतदान हुआ है इसकी सूचनाएं भी ब्लैक बोर्ड पर रेखाकिंत किया गया। लगभग 82 प्रतिशत मतदान हुये। चुनाव कर्मियों ने इस बार पानी और पुलिस व्यवस्था को ज्यादा दुरुस्त करने की बात संवादाताओं से कही।

अन्ततः चुनाव प्रक्रिया का मतदान वाला चरण ठीक 2:30 बजे समाप्त हुआ। सभी बूथ सेन्टरों/केन्द्रों से मत पेटियों को सील बन्द कर चुनाव आयोग के कक्ष में जमा करवाया गया। इसके बाद उम्मीदावारों, शिक्षकों व बच्चों की मौजूदगी में मतगणना की गई।

चुनाव आयोग के समक्ष की गई इस मतगणना के आधार पर विजयी पांचों उम्मीदवारों के नामों की घोषणा विद्यालय के सभी बच्चों के समक्ष सामूहिक रूप से की गई। पूर्व बाल पंचायत के सदस्यों द्वारा नये विजयी सदस्यों को पदभार सौंपा गया। विजयी सदस्यों द्वारा पद की शपथ ली गई। इस दौरान पिछली बाल पंचायत के सदस्यों ने अपने अनुभव शेयर किये। इस तरह लोकतांत्रिक प्रक्रिया और स्वस्थ माहौल में नई बाल पंचायत के गठन की गतिविधि सम्पन्न हुई।

द्वितीय बाल पंचायत गठन : 31 जनवरी, 2020

30 जनवरी को चुनाव प्रक्रिया की पूर्व तैयारी की गई। जिसमें कार्य, समय और जिम्मेदारी चार्ट चस्पा किया गया। बच्चों व शिक्षकों ने वोटर सूची, चुनाव चिन्ह, प्रचार सामग्री इत्यादि काम पूरा किया। प्राथमिक समूह में कुल 16 बच्चे, उच्च प्राथमिक से 8 बच्चे और माध्यमिक माध्यमिक समूहों से 2 बालिका व दो बालक प्रतिनिधि के रूप में खड़ी हुई। लगभग दो घण्टे के लिए चुनाव संबंधित प्रचार भी किया गया। संवाददाता की भूमिका में जो बच्चे थे, उन्होंने काफी बेहतर तरीके से अपनी भूमिका को निभाया। बच्चे अपने प्रतिनिधि साथी का जोर–शोर से प्रचार कर रहे थे। वह प्रत्येक समूह में जाकर बच्चों को बता रहे थे कि **''हम कैसे शाला की व्यवस्थाओं को बेहतर कर सकते हैं''**। बच्चे नारे भी लगा रहे थे। जैसे– ***''वोट दो, वोट दो, पतंग को वोट दो, बाल्टी को वोट दो''*** इत्यादि।

इस तरह पूरी तैयारी के साथ 31 जनवरी की कार्य योजना निम्न प्रकार रही

क्रम	समय	योजना का विवरण
1.	प्रातः 9:00 से 9:15 तक	सफाई (दैनिक)।
2.	प्रातः 9:15 से 9:50 तक	सभा
3.	प्रातः 9:50 से 10:00 तक	ब्रेक
4.	प्रातः 10:00 से 11:20 तक	चुनाव समूह में बातचीत करना। जैसे–चुनाव क्यों ? इसकी जरूरत क्या है ? चुनाव प्रक्रिया में आपके वोट की अहमियत क्या है ? हमें वोट क्यों देना चाहिये, किसे देना चाहिये, किसको नहीं देना चाहिये आदि।
5.	प्रातः 11:20 से दोपहर 12:00 तक	प्रत्याशियों द्वारा चुनाव प्रचार करना।
6.	दोपहर 12:00 से 12:50 तक	लंच
7.	दोपहर 12:50 से 1:20 तक	सामूहिक बातचीत में आगे की गतिविधि संचालन के बारे में।
8.	दोपहर 1:20 से 3:00 तक	वोटिंग का काम (दोपहर 3:00 बजे सभी की छुट्टी)।

बच्चों और शिक्षकों को जरूरतानुसार सामग्री वितरण करके चार पोलिंग बूथ तैयार किये गए। साथ ही जोनल मजिस्ट्रेट, रिटर्निंग अधिकारी और पुलिस कमीश्नर के रूप में इन बच्चों को जिम्मेदारी दी गई।

जैसे ही वोटिंग का कार्य प्रारम्भ हुआ, पर्ची लेने वाले बच्चों की लम्बी लाइनें लग गई। अपनी पर्ची लेकर बच्चा बूथ के अन्दर जाकर अपना वोट डालता है। जिसमें अपनी इच्छा से (जो प्रतिनिधि उसको अच्छा लगता) प्रतिनिधि के चुनाव चिन्ह् पर मोहर लगाता है। साथ ही अंदर बैठे बच्चे व शिक्षक उसकी अंगुली पर एक मार्कर से निशान लगाते हैं। पूरा चुनावी दृश्य था। मतदान के बाद मत गणना का काम तीन बजे से आरम्भ हुआ।

अगले दिन 1 फरवरी को सामुहिक सभा में बच्चों द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों की घोषणा की गई। जिसमें तन्नू, तबस्सुम, रहनुमा, सरफराज, शहबाज को नई बाल पंचायत के सदस्यों के रूप में चुने गये। औपचारिक रूप से इस सभा में पूर्व बाल पंचायत के सदस्यों ने अपने अनुभव शेयर किये, साथ ही नये लोगों ने शाला के बच्चों को विश्वास दिलाया कि ***'हम शाला की व्यवस्थाओं को बेहतर करेगें और इसमें हमें आपके सहयोग की जरूरत होगी''।***

इस प्रकार बाल पंचायत गठन की गतिविधियों से बच्चों में अपने विद्यालय के प्रति जिम्मेदारी, अपनत्व का भाव तथा आत्मविश्वास बढ़ा है। शाला की समस्याओं के समाधान में उनकी सक्रिय भागीदारी भी बढ़ी है।

उदाहरणार्थ :

- *दिगन्तर विद्यालय में लंच के बाद जो बच्चे अपने समूह में देरी से आते हैं उनके साथ बाल पंचायत के सदस्य बातचीत करते हैं। उनका रिकॉर्ड रख कर समूह शिक्षक को अवगत कराते हैं।*
- *कुछ समूहों में यदि बच्चों का व्यवहार ठीक नहीं है तो समूह के बच्चे बाल पंचायत को इस बात से अवगत कराते हैं। बाल पंचायत के सदस्य उस बच्चे से बात कर उसके व्यवहार को समझते हुये उससे काफी सहजता से बात कर समझाने की कोशिश करते हैं।*
- *सामग्री के प्रति जिन बच्चों का व्यवहार ठीक नहीं रहता उनके साथ बातचीत कर सामग्री के महत्व व उसकी उपयोगिता पर बातचीत करते हैं।*
- *जैसे विद्यालय कैम्पस में बेरी व जामून के फलों कुछ के पेड़ पेड़ लगे हुये हैं, उनके फलों को बाल पंचायत के सदस्य विद्यालय के सभी बच्चों में बराबर से वितरण करने में सहयोग करते हैं।*

2.2.2 राष्ट्रीय पर्व एवं उत्सव

✓ अम्बेडकर जयन्ती

भारत में डॉ, भीमराव अम्बेडकर का नाम बहुत ही सम्मान के साथ लिया जाता है। इनका संविधान निर्माण में अमूल्य योगदान रहा है। इस उपलक्ष में उनके जन्म दिवस (14 अप्रैल) को पूरे देश में अम्बेडकर जयन्ती के रूप में मनाया जाता है। विशेषतौर पर विद्यालयों में उनके योगदान के महत्त्व के संबंध में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

इसी के तहत दिगन्तर विद्यालयों में हर साल की भांति इस साल भी 14 अप्रैल, 2019 को अवकाश होने के कारण 15 अप्रैल को अम्बेडकर जयन्ती उत्सव मनाया गया। विद्यालय में इस उत्सव की तैयारी शिक्षकों द्वारा पूर्व में ही एक बैठक में इसकी योजना पर बातचीत कर आरम्भ कर दी गई थी। जिसमें शिक्षकों ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन दर्शन से संबंधित छोटी–छोटी पुस्तकें चयन कर बच्चों को उपलब्ध करायी। डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन से संबंधित प्रमुख घटनाओं और अनुभवों को सुनाकर बच्चों से चर्चा की। विभिन्न पुस्तकों का पठन और चर्चा से बनी समझ के आधार पर बच्चों ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर के बारे में स्वयं के विचार लिखकर प्रस्तुत किये। बच्चों द्वारा प्रस्तुत इन विचारों से 15 अप्रैल, 2019 को विद्यालय में एक "**प्रदर्शनी का आयोजन**" किया गया। सामुहिक कार्यों में भागीदारी के लिए तत्परता, एक–दूसरे के प्रति संवेदनशीलता और सामाजिक रूढ़ियों व परिस्थितियों पर बातचीत करने के उद्देश्य से 15 अप्रैल को प्रदर्शनी के साथ–साथ एक मंचीय कार्यक्रम किया गया। जिसमें बच्चों द्वारा गीत–कविताएं, गाने, झलकियां (भीम का बचपन) एवं नाटक (ठाकुर का कुंआ) मंचन और डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन से संबंधित विचारों को प्रस्तुत करने का काम किया गया।

✓ गांधी जयन्ती

प्रदर्शनी और सांस्कृतिक कार्यक्रम अच्छा रहा। जहां बच्चों को डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जीवनी की जानकारी में बढ़ोतरी हुई, वहीं विद्यालय में सामुहिकता की भावना से उत्सव का सफल आयोजन हो पाया। इस बार गांधी जयन्ती उत्सव की शाला स्तर पर तैयारी संबंधी बैठक की गई। जिसमें इस बार गांधी जयन्ती को मनाने के तरीके को लेकर चर्चा की गई। बैठक में गांधी जी के जीवन से संबंधित नाटक का मंचन करने, छोटी–छोटी झलकियां दर्शानें, गीत गाने और गांधी जी से संबंधित डॉक्यूमेंट्री फिल्म देखने पर विचार मंथन हुआ। आरंभिक तैयारी के बाद 2 अक्टूबर, 2019 को दिगन्तर विद्यालयों में गांधी जयन्ती उत्सव मनाया गया। इस दिन बच्चों ने गांधी जी के जीवन पर आधारित झलकियों एवं उनके विचारों को प्रस्तुत किया और बच्चों द्वारा एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया, जिसमें गांधी जी के जीवन चरित्र को विभिन्न प्रकार के चित्र चार्टों के माध्यम से प्रस्तुत किया। गांधी आश्रम की झलक व गांधी जी का स्वतंत्रता

आन्दोलन में योगदान को काफी बेहतर तरीके से उभारा, साथ ही अहिंसा के मायने क्या है यह भी समझा। विगत तैयारी से विकसित सामग्री की प्रदर्शनी भी मंचित की गई।

पूरा दिन गांधी जयन्ती पर केन्द्रित रहा। एक पर्व की तरह इसको मनाया गया। इस दिन प्रतिदिन के काम के अतिरिक्त गांधी के जीवन को साक्षात प्रोजेक्टर पर देखने पर बच्चों के चेहरों पर एक खास तरह की खुशी साफ झलक रही थी। इस तरह यह दिन बच्चों की समझ के विकास के साथ आगे के लिए स्मरणीय रहा।

✓ स्वतंत्रता दिवस

दिगन्तर विद्यालय में राष्ट्रीय पर्वों को काफी उत्साह व सम्मान के साथ मनाया जाता है। उत्सव मनाने के दौरान इन पर्वों के मायने और जरूरत का भी ध्यान रखा जाता है। इसलिए एक माह पूर्व ही राष्ट्रीय पर्वों की तैयारी का समय निकाला जाता है। इस सत्र में भी दिगन्तर विद्यालयों में 73वां स्वतंत्रता दिवस और 68वें गणतंत्र दिवस को हर्षो उल्हास के साथ मनाया गया।

- आजादी के इस पर्व को मनाने के लिए सबसे पहले एक माह पूर्व शिक्षकों के साथ बैठक कर कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाती है। जिसमें स्वतंत्रता दिवस की महत्ता को बच्चों और लोगों के बीच प्रस्तुत कैसे किया जाये, इस पर विचार विमर्श किया गया। आजादी के मायने तथा इस आजादी दिलाने में जिन महापुरुषों का योगदान रहा उस थीम पर यह कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। 73वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर रोशनी समूह की बालिका द्वारा झण्डारोहण किया गया। इसके अलावा इस दिन दिगन्तर माध्यमिक विद्यालय भावगढ में मंचीय कार्यक्रम व प्रदर्शनी लगाई गई। इस कार्यक्रम में दिगन्तर विद्यालय के सभी बच्चों एवं शिक्षकों की भागीदारी रही।

- कार्यक्रम का विवरण इस प्रकार से रहा।

मंचीय कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम
1.	**मंच संचालन** : फैसल व अन्नू दो बच्चों ने किया।
2.	**ध्वजारोहण** : रोशनी समूह की बालिका अनम ने किया।
3.	**गीत** : एक हमारी और एक उनकी मुल्क में हैं आवाजे दो। चांदनी समूह के बच्चों द्वारा।
4.	देश भक्ति गीत मेरे देश की धरती व साथ दो गीतों का मिक्स करते हुये : नृत्य संकल्प व चांदनी समूह के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किया गया।
5.	मंटों की कहानी पर आधारित नाटक टोबा टेक सिंह। शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत किया गया। यह कहानी भारत विभाजन के समय की है।
6.	अंग्रेजी में कविता : I am so happy तितली समूह के बच्चों द्वारा।
7.	स्वतंत्रता में जिन देश भक्तों का योगदान रहा, उनसे संबंधित झांकी खोरेबारियान के चन्दा व महल समूह के बच्चों ने प्रस्तुत की।
8.	विचार (समुदाय से)

✓ प्रदर्शनी

प्रदर्शनी की मुख्य थीम कार्यक्रम के अनुसार रही। प्रदर्शनी में समूह के अनुसार निम्न चरणों में प्रस्तुतिकरण किया गया।

समूह चन्दा व महल : भारत में अंग्रेजों का आगमन ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना व अंग्रेजों का शासन।

समूह रोशनी व अमन : अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर किये गए अत्याचार की घटनायें।

समूह चाँदनी : भारत में आजादी के लिए की गयी क्रान्ति व क्रांतिकारी घटनायें।

समूह संकल्प व आंगन : आजादी के समय की स्थिति एवं बंटवारा।

समूह संगीत व मेहंदी : आजाद भारत का विकास, समस्याएं, सवाल ? जवाब व वर्तमान परिदृश्य।

समूह सावन व तितली : महापुरुषों का योगदान? स्वतंत्रता सेनानी पोस्टर, चित्र आदि

नोट : प्रदर्शनी की तैयारी में सबसे पहले बच्चों के साथ आजादी के संदर्भ में विस्तार से बातचीत की गई, बच्चों ने पुस्तकों का अध्ययन किया, आज की स्थिति में आजादी के मायने क्या इसे समझा गया।

उपरोक्त कार्यक्रम की तैयारी में सबसे पहले शिक्षकों एवं बच्चों को पुस्तकें एवं बाल पत्रिकाएं उपलब्ध करवा कर उन पर चर्चाएं की गई। पुस्तक अध्ययन और चर्चा के आधार पर बनी समझ अनुसार बच्चों ने अपने विचारों को लेखन एवं चित्रों द्वारा निरूपित किया। जिनको स्वतंत्रता समारोह में लोगों के समक्ष प्रदर्शनी लगाकर प्रस्तुत किया। तैयार में दो सप्ताह तक विद्यालय में बच्चों द्वारा गीत–कविताओं, गानों, देशभक्ति के गीतों का चयन किया गया और प्रतिदिन तीन बजे बाद नाटक की तैयारी का माहौल बना रहा।

विगत एक माह की तैयारी और उत्साह के साथ यह आजादी पर्व मनाया गया। इस दिन सभी बच्चे, शिक्षक और समुदाय के काफी लोग समय से पूर्व ही विद्यालय प्रांगण में नजर आये। बच्चे और शिक्षक अपनी जिम्मेदारी मुताबिक विद्यालय आते ही काम में लग गये। मंच बनाने, प्रदर्शनी का काम व्यवस्थित करने और आगन्तुकों से बातचीत करने के बाद तैयारी को अंतिम रूप दिया गया। बच्चों ने ही पूरे कार्यक्रम का संचालन किया। शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत नाटक मंटो की कहानी पर आधारित ''टोबा टेक सिंह'' काफी पंसद आया। लोगों ने मूल विचार को समझा। बच्चों के सामुहिक नृत्य ने भी कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये।

दिगन्तर के अन्य कार्यक्रमों और समुदाय से लगभग 300 लोगों ने इस कार्यक्रम में भागीदारी की। सभी ने सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने के बाद बच्चों द्वारा आजादी के संदर्भ में लगाई प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

प्रदर्शनी को देखकर आजादी की जरूरत और आजादी के पूरे सफर को समझा गया। जिसमें बच्चों द्वारा अंग्रजों के आने से पहले के भारत की स्थिति, अंग्रेजों का भारत में प्रवेश, 1857 की क्रांति, अंग्रजों के अत्याचार, असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोड़ों आन्दोलन, भारत विभाजन और स्वतंत्रता के क्रमिक विकास को दर्शाया गया।

सभी ने प्रदर्शनी की काफी प्रशंसा की। मिठाई खाते हुए लोग प्रदर्शनी के बारे में चर्चाएं करते नजर आ रहे थे। लोगों ने प्रदर्शनी स्थल पर रखी एक सुझाव डायरी में अपने सुझाव और विचार लिखे, जिनमें बच्चों और शिक्षकों की मेहनत को काफी अच्छा बताया। इस तरह विद्यालय में 73वां स्वतंत्रता दिवस काफी हर्षोंउल्हास के साथ मनाया गया।

✓ गणतंत्र दिवस

1 जनवरी को सभी शिक्षकों ने मिलकर एक बैठक की, जिसमें गणतन्त्र दिवस की तैयारी में इस बार की थीम पर चर्चा की गई। बच्चों के साथ कार्यक्रम की तैयारी के संदर्भ स्क्रिप्ट तैयार करने का कार्य किया गया। जिसमें राष्ट्रगान, देशभक्ति व प्रेरणा गीत, हिन्दी–अंग्रेजी कविताएं, झलकी, नृत्य, झांकी, विचार (हिन्दी व अंग्रेजी) और नाटक का मंचन करना इत्यादि तय किया। गणतन्त्र दिवस पर कार्यक्रम की तैयारी के हिस्से के रूप में शिक्षकों ने असगर वजाहत की कहानी पर आधारित नाटक ''सबसे सस्ता गोश्त'' की तैयारी भी शुरू की। इसमें स्क्रिप्ट का चयन, पढ़ना और उस पर बातचीत कर नाटक की तैयारी की गई।

सर्दी की अधिकता की वजह से कलेक्टर द्वारा विद्यालयों में जल्दी अवकाश करने से समारोह की तैयारी के लिए जल्दी में तीन–चार बैठकें की गई। जिसमें सांस्कृतिक, प्रदर्शनी कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने तथा व्यवस्थात्मक काम पर बातचीत की। समयाभाव के कारण बच्चों के साथ तैयारी में समस्याएं आई लेकिन कार्यक्रम की गुणवत्ता पर फोकस करते हुये तैयारी में सभी ने उत्साह व जोश के साथ भाग लिया। 24 जनवरी को अंतिम अभ्यास के रूप में पूरे विद्यालय के समझ कार्यक्रम का पूर्वाभ्यास किया गया।

26 जनवरी को प्रातः 8:00 बजे ही सभी शिक्षक और कुछ बच्चे विद्यालय में आकर अपनी जिम्मेदारी के अनुसार तैयारी में जुट गए। बच्चों एवं शिक्षकों में काफी उत्साह दिखाई दे रहा था। हर कोई अपना कार्य समय पर पूरा करने में लगा हुआ था। जिसका कार्य पूरा हो जाता वह दूसरे की मदद में लग जाता। आज बच्चे अलग–अलग व नये कपड़ों में भी दिखाई दे रहे थे। समुदाय से अभिभावक आने लगे थे। कुछ अभिभावकों ने कार्यक्रम स्थर पर फरियां लगवाने में भी मदद की। मंच संचालन वाले बच्चे माईक पर सभी के लिए अपडेट दे रहे थे जैसे कि कार्यक्रम वाले बच्चे कमरा नम्बर में जाकर तैयार हों और वापस अपनी जगह आकर बैठ जाएं। फिजा और फरत ने (मंच संचालक) द्वारा सभी के स्वागत के साथ कार्यक्रम 9.00 बजे आरम्भ किया। बालिका रानी ने झण्डा रोहण किया। बालिका समूह के बच्चों ने मंच पर खड़े रहकर राष्ट्रगान में सभी का साथ दिया। इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जो इस प्रकार थे।

मेरे सपनों को जानने का हक रे : गीत के साथ अपने अधिकारों के लिए आवाज
सही मायने में देश प्रेम क्या है ? एवं लोकतंत्र पर एक चर्चा को प्रस्तुत किया जायेगा
बच्चों द्वारा बाल गीत : हमारी प्रकृति को हम कैसे बचा सकते हैं। इस पर छोटे बच्चों द्वारा एक बाल गीत ''ना काटो मुझे दुखता है!......''
''विस्तार है अपार....'' : भूपेन्द्र हजारी के इस गीत पर नृत्य भावों से आज की समस्या को उभारना।
बाल कविता : ''पांच मोटे हाथी झूम के चले..........''
शिक्षकों द्वारा ''सबसे सस्ता गोश्त'' नाटक का प्रस्तुतिकरण।
विचार (समुदाय से)

उपरोक्त सभी कार्यक्रमों ने दर्शकों का ध्यान आकृषित किया। शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत नाटक व भूपेन्द्र हजारी के गीत पर जो नृत्य प्रस्तुत हुआ, उसने तो कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये। इस दिन हरियाणा से आये राजकीय शिक्षकों ने भी यह कार्यक्रम देखा। लोग ज्यादातर यही कहते नजर आये कि पूरे कार्यक्रम में संविधान की प्रस्तावना झलक रही थी।

विद्यालय प्रबंधन समिति के उपाध्यक्ष निर्मला जी ने मंच से विद्यालय के बारे में कहा कि –

> *"यह स्कूल हमारे बच्चों को एक अच्छा इन्सान बनाने में काफी सहयोग कर रही है। हमारे बच्चे स्कूल में बहुत खुश रहते हैं। कभी भी स्कूल आने के लिए मना नहीं करते हैं। यदि हम घर रोकें तो भी नहीं रुकते हैं। यहां के शिक्षक भी बहुत अच्छा काम करते हैं।*

मंच पर सांकृतिक कार्यक्रम की समाप्ति के बाद समुदाय के लोगों, आगुन्तकों व बच्चों ने गणतंत्र दिवस पर आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। प्रदर्शनी में गणतंत्र क्या है ? इसको समझना व संविधान के मायने समझते हुये अपने अधिकारों के साथ–साथ हमारे कर्तव्य क्या हैं। इस पर भी समझ बनाई गई। साथ ही वर्तमान की समस्याओं को उठाया गया। ''देश की विविधता एवं पंथ निरपेक्षता'' प्रदर्शनी की मुख्य थीम रही। थीम के अनुसार बच्चों ने पोस्टर तैयार किये व इसकी बेहतर प्रदर्शनी लगाई गई।

सभी ने प्रदर्शनी देखने के लिए अपना समय दिया और बच्चों द्वारा की गई तैयारी की काफी प्रशंसा की। इस कार्यक्रम में मिठाई वितरण के लिए समुदाय द्वारा 3000 रुपये भी आये।

✓ बाल दिवस

14 नवम्बर, 2019 को दिगन्तर विद्यालयों में नेहरू जंयती के अवसर पर बाल दिवस का आयोजन किया गया। इस दिन सर्वप्रथम सामूहिक सभा में बच्चों एवं शिक्षकों ने नेहरू जी के जीवन व उनके योगदान के संदर्भ में अपनी बात रखी। इसके बाद एक सामूहिक गतिविधि की गई, जिसमें प्राथमिक समूह द्वारा ''मेरी पसन्द'' थीम पर लिखने व चित्र बनाने का कार्य किया और उच्च प्राथमिक से माध्यमिक स्तर के बच्चों द्वारा ''मेरा सपना'' थीम पर अपनी बात लिखने का कार्य किया। सभी बच्चों द्वारा अपने लेखन का बोर्ड पर डिस्प्ले किया और निम्न खेल गतिविधियां समूह स्तर पर आयोजित की गईं।

- कंचा दौड
- कुर्सी दोड
- खो–खो
- बॉलीबाल
- फुटबॉल
- शतरंज
- कबड्डी

✓ शिक्षक दिवस

5 सितम्बर, 2019 को दिगन्तर के दोनों विद्यालयों में शिक्षक दिवस मनाया गया। इस दिन बच्चों ने स्वयं बच्चों के स्तर के अनुसार योजना तैयार कर शिक्षक की भूमिका निभाई। शिक्षकों द्वारा बच्चों की योजना तैयारी में मदद की गई। इसके बाद शिक्षकों ने रोहित धनकर के लेख ''**शिक्षक की स्वायत्ता**'' को पढ़कर इस पर संवाद किया। शिक्षक की स्कूल में भूमिका को गहनता से समझा गया।

✓ शाला स्थापना दिवस

20 जुलाई, 2019 को दिगन्तर विद्यालय भावगढ़ व खोरैबारियान शाला में शाला स्थापना दिवस मनाया गया।

इस दिन सभा के समय पूर्व छात्र, छात्राएं एवं अभिभावक स्कूल में पधारे, उन्होंने स्कूल के बारे में अपने अनुभव शेयर किये। शिक्षकों द्वारा स्कूल की शुरुआत से लेकर अब तक की कहानी को चित्र–चार्टों के माध्यम से बच्चों को बताया। बच्चों द्वारा अपने माता–पिता जो कि पूर्व में दिगन्तर स्कूल में पढ़ चुके हैं उनसे उनके समय में स्कूल के क्या अनुभव रहे, उन्हें पता किया। उनके अनुभवों को चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत किया। बच्चों ने भी अपने स्कूल के अनुभवों को प्रस्तुत किया।

2.2.3 बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम

"दिगन्तर विद्यालयों" में शिक्षकों द्वारा वर्ष में दो बार स्वास्थ्य संबंधी कुछ जरूरी जानकारी बच्चों से ही पता कर सभी बच्चों के अलग–अलग स्वास्थ्य कार्ड भरे जाते हैं। स्वास्थ्य कार्ड के तीन भाग होते हैं। प्रथम भाग शिक्षक द्वारा, दूसरा भाग बच्चों द्वारा एवं तीसरा भाग प्राथमिक स्तर पर जांच करके स्वास्थ्य संदर्भ शिक्षक द्वारा भरा जाता है। यह कार्ड बच्चों की स्वास्थ्य संबंधी सभी जानकारियां उपलब्ध कराने में मददगार होता है। जिससे बच्चों में होने वाली बीमारियों का समय पर पता करके इलाज उपलब्ध कराया जा सके। गत सत्र तक बिना किसी खर्च के ***"खेजड़ी सर्वोदय जनरल हेल्थ आई केयर सेन्टर"*** द्वारा बच्चों की बीमारियों का इलाज करवाया जाता रहा है। लेकिन इन दिनों में उनके पास आर्थिक स्रोत नहीं होने के कारण यह कार्य बन्द कर दिया गया है।

SDM Hospital द्वारा बच्चों की स्वास्थ्य जांच

इस सत्र में बच्चों के स्वास्थ्य की जांच को लेकर जयपुर के चुनिन्दा प्रसिद्ध अस्पतालों में से संतोकबा दुर्लबजी मेमोरियल अस्पताल द्वारा बच्चों के स्वास्थ्य की जांच की जिम्मेदारी ली। यह जांच साल में दो बार छह माह के अन्तराल में करने का तय किया गया।

प्रथम चरण

26 व 27 सितम्बर, 2019 को दिगन्तर के दोनों विद्यालय दिगन्तर माध्यमिक विद्यालय भावगढ व खोरैबारियान शाला के बच्चों के स्वास्थ्य की जांच की गई। यह जांच Santokba Durlabhji Memorial Hospital, Jaipur से आई डॉक्टर व नर्सिंग टीम के सहयोग से संभव हो पाया। बच्चों के स्वास्थ्य जांच में जिन बच्चों के दांत साफ नहीं थे, उनकी सफाई की गई। यह कार्य काफी गुणवत्ता के साथ सम्पूर्ण हुआ। चिकित्सक व नर्सिंग टीम द्वारा इस कार्य को सहजता के साथ किया। जांच टीम ने जिन बच्चों को जांच एवं ईलाज हेतु रैफर किया गया था उनका विवरण इस प्रकार से है।

द्वितीय चरण

5 मार्च, 2020 को दिगन्तर के माध्यमिक विद्यालय भावगढ के बच्चों के स्वास्थ्य की जांच की गई। यह जांच Santokba Durlabhji Memorial Hospital Jaipur से आई डॉक्टर व नर्सिंग टीम के सहयोग से किया गया। इस दिन 157 बच्चों के स्वास्थ्य की जांच हुई। इसी दिन Dr. Sanjana Bhojwani, Head, Department of Outreach Services, SDMH द्वारा कक्षा 6वीं से 10वीं तक की छात्राओं के साथ मासिक धर्म चक्र पर विस्तार से बातचीत की गई। इस चर्चा सत्र में दिगन्तर कार्यकारिणी से अध्यक्ष प्रफुल्ला कुमारी जैन, निदेशक, रीना दास व कॉम्यूनिकेशन समन्वयक, ऋति दास धनकर शामिल रही। दूसरे दिन यानी 6 मार्च को भी शेष रहे बच्चों के स्वास्थ्य की जांच की जानी थी। लेकिन कोरोना महामारी के कारण यह आगे के लिए स्थगित किया गया।

2.2.4 बाल फिल्मों का प्रदर्शन

दिगन्तर विद्यालयों में बच्चों को स्वयं समझ कर सीखने के अवसर दिये जाते हैं। जिसके अन्तर्गत बच्चों के साथ विषयवार शिक्षण कार्य के अतिरिक्त फिल्में भी दिखाई जाती हैं। ये फिल्में बच्चों में स्वयं चित्रों एवं घटनाक्रम को समझने में मददगार होती हैं। अतः इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये 27 व 28 सितम्बर को भावगढ विद्यालय में बच्चों के स्तर के मुताबिक अलग–अलग समूह में फिल्म दिखाई गई। संसाधनों की पूर्व तैयारी के साथ प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक–स्तरानुसार निम्न फिल्में दिखाई गई।

- खुदा के लिए
- मिशन मंगल
- वॉर एण्ड पीस
- स्त्री
- Babys day out
- निल बटे सन्नाटा
- होप और हम
- स्टैनली का डब्बा
- चिल्लर पार्टी
- The lion king
- गुलजार द्वारा तैयार मुंशी प्रेमचन्द की कहानी पर आधारित एपिसोड : बूढ़ी काकी, पूस की रात और कफन फिल्में देखी गई।

उपरोक्त फिल्में देखने के बाद बच्चों के साथ देखी गई फिल्मों पर चर्चा उनके समूह में शिक्षकों द्वारा की गई। ''वॉर एण्ड पीस'' फिल्म पर जब बच्चों के साथ चर्चा की गई तो उनका कहना था कि अब तक हम परमाणु परीक्षण के केवल सकारात्मक पक्ष ही देख रहे थे। लेकिन इस फिल्म ने यह भी दिखा दिया है कि परमाणु परीक्षणों के नकारात्मक प्रभाव कितने जबरदस्त होते हैं। और यदि परमाणु परीक्षणों की होड़ में ऐसा ही होता रहा और तो एक दिन दुनिया के आगे यह बहुत ही चुनौतिपूर्ण होगा।

इस प्रकार बच्चों ने काल्पनिक प्रश्नों का जवाब अच्छी प्रकार से दिया। अगर बच्चे किसी मूवी को देखते हैं तो उनका एक नजरिया होता है। बच्चा एक स्थिति में जाकर सवालों के जवाब अपने हिसाब से देता है।

इस प्रकार चर्चा में सभी बच्चों व शिक्षकों के अनुभव एवं भागीदारी अच्छी रही।

2.2.5 बच्चों के साथ हस्तकार्य

दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति जिस विशिष्ट भाषा के रूप में अपनी संवेदनाओं को बाहर लाता है उसे कला कहते हैं। दूसरे शब्दों में सृजन में नवीनता व विविधता हो और उपयोग में भिन्नताएं पाई जाती हों उसे कला कार्य कहते हैं। कला के सृजन में कल्पनाशीलता, नवीनता, विविधता एवं सौन्दर्यात्मकता होती है जो कि दुनिया के प्रति संवेदनशील नवीन दृष्टि से ही सम्भव होती है। कला के अन्तर्गत किये जाने वाले कार्यो में हम विचार, कल्पना और अपने–आपको अभिव्यक्त करते हैं।

हस्तकार्य भी तमाम अभिव्यक्त कलाओं में से एक है। जिसका सीधा अर्थ है कि हाथ से किया जाने वाला कार्य। विद्वानों के अनुसार कोई भी व्यक्ति हस्तकार्य में जितना पारंगत होगा उतना ही सुन्दर तरीके से अपने जीवन का सृजन कर सकता है। चूंकि इंसानों को जीवन में अधिकतर कार्य हाथों से ही करने होते हैं। अतः इसी को ध्यान में रखते हुए दिगन्तर विद्यालयों में प्रतिदिन बच्चों के लिए एक कालांश हस्तकार्य का होता है, जिसके अन्तर्गत बच्चों द्वारा निम्न कार्य करवाये जाते हैं।

- क्ले से मॉडल बनाना।
- कारपेन्ट्री में लकडी से मॉडल बनाना।
- पेपर मैशी।
- रंगोली/मेहंदी/माण्डने बनाना।
- पेपर फोल्डिंग।
- बंधेज/छापा
- कोलाज करना।
- कबाड़ से जुगाड़।
- पेन्टिंग।
- पेपर कटिंग।
- स्टिचिंग (सिलाई)

बच्चों के लिए 10 सिलाई मशीनें Abercrombie & Kent Philanthropy की मदद से प्राप्त हुईं। जिनका उपयोग बच्चों द्वारा फरवरी 2018 से शुरू किया गया था। सिलाई का कार्य इस सत्र में भी नियमित जारी रहा। इसके अलावा विद्यालय में बच्चों को प्लमिबंग का कार्य भी सिखाया जाता है। इन दोनों गतिविधियों में लगभग उच्च प्राथमिक से माध्यमिक स्तर के 100 बच्चे शामिल रहे हैं, जिसमें लड़के व लड़कियां दोनों ही शामिल थे। बच्चों ने उपरोक्त दोनों हस्तकार्यों को सीखने में काफी रुचि ली है, जिसके कारण उनके द्वारा किये गये अन्य कार्यों में भी एक खास तरह का आत्मविश्वास दिखाई देता है।

अकादमिक बैठकें

दिगन्तर विद्यालय कार्यक्रम के अन्तर्गत कार्यक्रम को बेहतर दिशा देने के लिए विभिन्न स्तरों पर बैठकों का आयोजन किया जाता है। जिसके अन्तर्गत अकादमिक व व्यवस्थात्मक सभी बैठकें शामिल होती हैं। आरंभिक शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक नीतियों, शिक्षण व शैक्षिक सिद्धान्तों को दिशा देने में मदद करना दिगन्तर विद्यालय के उद्देश्यों में निहित है। अतः इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये दिगन्तर विद्यालय समूह द्वारा विभिन्न स्तर पर बैठकें नियोजित की जाती है। काम के दौरान आ रही समस्याओं को आपस में बांटने, उसके उचित समाधान खोजने और तार्किक तरीके से सोच–विचार कर अपना काम करने में मदद के लिए विभिन्न बैठकों का प्रावधान रखा गया।

2.3.1 शेयरिंग बैठक

स्कूल में बच्चों की शैक्षिक स्थिति को बेहतर करने के लिए शिक्षकों द्वारा प्रत्येक सप्ताह शेयरिंग बैठक का आयोजन किया जाता है। इस बैठक में 5 या 6 शिक्षक शामिल होते हैं। प्राथमिक स्तर पर एक और उच्च प्राथमिक से माध्यक तक के शिक्षकों के दो समूह इनमें समूहवार बैठक करते हैं। आधे दिन के लिए की जाने वाली इन बैठकों में अकादमिक समन्वयक भी शामिल होते हैं। शिक्षक इस बैठक में अपने सप्ताह भर के काम की प्रगति, कठिनाईयां और आगामी कार्य योजना संबंधी रपट शेयर करते हैं।

इन बैठकों से शिक्षकों को एक–दूसरे से सीखने के अवसर मिलते हैं, इनमें शिक्षण कार्य के दौरान आयी समस्याओं पर विचार–विमर्श और उनके समाधान में मदद मिलती है। शिक्षकों को एक–दूसरे को समझने, आपसी संवाद को बढ़ावा देने, पारदर्शिता बनाये रखने और अपने काम को निखारने में ये बैठकें सीधे–सीधे मदद करती हैं।

प्राथमिक से माध्यमिक स्तर पर की गई बैठकों के मुद्दे

प्राथमिक से माध्यमिक शिक्षकों के दो समूह में शेयरिंग की जाती है। इस सत्र में लगभग 32 बैठकें की गई। इन बैठकों में निम्न मुद्दों पर बातचीत/चर्चा की गई –

- शैक्षणिक समस्याओं पर बातचीत।
- हिन्दी भाषा शिक्षण के अन्तर्गत पोथियों पर किये जाने वाले काम के तरीकों को समझना।
- अनियमित बच्चों के बारे में नीति बनाई गई।
- बच्चों के सीखने का निरन्तर विश्लेषण।

- गणितीय अवधारणाओं को समझना।
- अंग्रेजी में समूह का माहौल तैयार करना।
- आरम्भिक स्तर के बच्चों के साथ पढ़ना–लिखने पर बेहतर तरीके से काम करना।
- गणितीय भिन्न व भाग की अवधारणा।
- विज्ञान से सम्बन्धित फिल्में देखना।
- गणित शिक्षण में सामग्री का उपयोग।
- अंग्रेजी शिक्षण (कहानी सुनाना)।
- प्रयोगशाला में प्रयोग।
- गणित में भाग की अवधारणा।
- बच्चों का लेखन सुधारना।
- बच्चों से बातचीत कैसे करें ?
- वैदिक गणित की अवधारणा पर चर्चा कर समझना।
- लोकतंत्र/गणतंत्र व्यवस्थाओं पर विस्तार से चर्चा कर लोकतंत्र में नियम कैसे बनते हैं तथा विभिन्न स्तरों पर सरकार के कार्यों की स्थिति व अन्तर को समझना।
- संस्कृत शिक्षण में कहानियां, कविताओं का इस्तेमाल कैसे करें। तृतीय भाषा के रूप में संस्कृत ही क्यों पढ़ाये ?
- उर्दू में आरम्भिक स्तर पर बच्चों के साथ कार्य कैसे करें।
- गणित, अंग्रेजी शिक्षण, भाषा (हिन्दी) शिक्षण, सामाजिक अध्ययन में रचनात्मक कार्य।
- बच्चों के लिए योजना एवं अंकन को आपस में देखना एवं समझना।
- लिखित कार्यों का अवलोकन।
- लेखन क्षमता बढ़ाने पर बातचीत।
- उपस्थिति पर निरन्तर बातचीत करना।
- समुदाय सम्पर्क पर बातचीत।
- सभा गतिविधियों पर बातचीत।
- बच्चों के व्यवहार पर बातचीत।
- व्यवस्था संबंधित समस्याओं पर बातचीत। इत्यादि

2.3.2 महासभा बैठक

महासभा बैठक शिक्षकों के सीखने एवं बच्चों के लिए शैक्षिक कार्य में मदद हेतु एक महत्वपूर्ण बैठक है। इस बैठक का आयोजन प्रत्येक वर्ष डेढ़ से दो माह के बीच किया जाता है। इस सत्र में कुल 4 महासभा आयोजित की गई। जिनमें विद्यालय से जुड़े सभी शिक्षक और समन्वयक शामिल हुए। बैठक में समन्वयकों द्वारा साप्ताहिक समीक्षा व नियोजन बैठक के आधार पर तैयार रपट प्रस्तुत की गई। जिसमें दो महीने में आयोजित शेयरिंग व नियोजन बैठकों की सभी शैक्षिक समस्याओं (उत्तरित या

अनुउत्तरित) के बारे में बातचीत की जाती है। जिन समस्याओं के समाधान शेयरिंग बैठकों में नहीं मिले, महासभा में सब मिलकर उनके हल तलाशने का काम किया। यह बैठकें शिक्षकों की अकादमिक समझ विकसित करने में मददगार रही हैं। इसके अलावा यह बैठकें शिक्षकों के कार्य में पारदर्शिता रखने, एक–दूसरे की सीखने में मदद करने, समझने और आपस में विश्वास व भरोसा कायम करने के रूप में उभर कर सामने आई हैं। साथियों में एक नई ऊर्जा का संचार और शैक्षणिक कार्यक्रम के बेहतर संचालन के लिए इन बैठकों की उपयोगिता व सार्थकता बढ़ जाती है।

इस सत्र में की गई 4 महासभा बैठकों में मुख्य रूप से निम्न अकादमिक मुद्दों पर चर्चा की गई–

- गणित में एक की एक से संगतता।
- गणित शिक्षण में ठोस चीजों का उपयोग।
- सजीव के लक्षण को समझना।
- मौखिक गणित पर काम।
- 10 के डिब्बे की अवधारणा।
- मात्राओं पर बच्चों के साथ कार्य कैसे करें।
- बच्चों के लिए नृत्य एवं साहित्य।
- सभ्यता एवं संस्कृति में अन्तर।
- जीव जन्तुओं में क्या अन्तर है।
- भाषा शिक्षण में कहानी व कविताओं का उपयोग।
- समूह में बच्चों के लिए अंग्रेजी शिक्षण का माहौल तैयार करना।
- बच्चों को स्वयं अधिक से अधिक अंग्रेजी की कहानी पढ़ने को देना।
- बच्चों का आपसी व्यवहार।
- हस्तकार्य में विभिन्न प्रकार के कार्यों को समझना।
- बच्चों की सभा में भागीदारी एवं अभिव्यक्ति के स्तर को कैसे बेहतर करें।
- सभा गतिविधियों का विश्लेषण।
- प्रयोगशाला का शिक्षण में उपयोग।
- रटना और समझकर काम करने के मायने।
- प्रोजेक्ट कार्य के संदर्भ में इत्यादि।

इसके अतिरिक्त इस बैठक में विद्यालय की प्रगति के सतत आंकलन और दिशा देने का काम किया है।

2.3.3 कार्यक्रम समन्वयक बैठक

दिगन्तर विद्यालय कार्यक्रम के बेतहर संचालन एवं उसे सही दिशा में कार्य करने हेतु मदद, सहयोग और समन्वयन के लिए इस बैठक का आयोजन किया गया। इसमें समन्वयक समूह व निदेशक शामिल रहते हैं। इसमें समन्वयक समूह द्वारा कार्यक्रम की रपट का प्रस्तुतिकरण किया गया। जिससे आगामी कार्य योजना निर्माण के लिए नियमित दिशा मिलती है। इन बैठकों में मुख्य रूप से विद्यालय की जरूरतों को चिन्हित करने, पूरे विद्यालय के माहौल, गतिविधि कलेण्डर के मुताबिक प्रगति का आंकलन तथा आगे की दिशा तय करने का काम किया गया। इसके अलावा विद्यालय के लिए सामुहिक जिम्मेदारी एवं जवाबदेही की भावना का विकास करने साथ–साथ एक–दूसरे से सीखने का अवसर मुहैया कराने का काम भी किया है।

नियमित बैठकों से निर्णय प्रक्रिया में सरलता और प्रभाविकता आई है। जो विद्यालय के संचालन में दिशा व गति देने में सहायक है। इस सत्र में विद्यालय में नये शिक्षकों का चयन, प्रशिक्षण, शिक्षक कार्यशालाए, मेहमानों के लिए योजना, तैयारी, बच्चों की शैक्षिक स्थिति के बारे में निरन्तर विश्लेषण, समुदाय के साथ रिश्ता, शाला का बजट, गतिविधि कलैण्डर एवं प्रवेश नीति इत्यादि विद्यालय संबंधी तमाम निर्णयों के लिए कुल 30 कार्यक्रम बैठकें की गई।

2.3.4 व्यवस्थात्मक कार्य समीक्षा बैठकें

विद्यालय के सुचारू एवं व्यवस्थित संचालन में मदद हेतु एक टीम है। जो विद्यालय के व्यवस्था संबंधी कार्यों में मदद करती है। यह टीम हर सप्ताह विद्यालय की व्यवस्था संबंधी कार्यों की समीक्षा करती है। जिसके लिए व्यवस्थात्मक बैठकों का आयोजन करके निम्न बिन्दुओं पर बातचीत होती है :

- कैम्पस की देख–रेख व सुरक्षा।
- पेड़–पौधों में निरन्तर पानी देना।
- सामग्री वितरण की व्यवस्थित करना।
- विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों में व्यवस्थात्मक मदद करना।
- स्टोर की व्यवस्था।
- मेहमानों की व्यवस्था करना।
- निर्माण कार्य से संबंधित व्यवस्थाओं का ध्यान रखना।
- बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण कार्य।
- चौकीदारी के कार्य का विश्लेषण करना एवं जिम्मेदारी बांटना।
- पेड़–पौधों की सुरक्षा।
- मैन्टिनेंश की निरन्त प्रक्रिया में शामिल होना।
- पुस्तकालय की व्यवस्थाओं पर कार्य।
- बस संचालन में चालकों एवं सहायकों के कार्य का विश्लेषण करना।
- जरूरत पर नये चौकीदार का चयन करना।

2.4

अकादमिक कार्यशालाएं एवं गतिविधियां

दिगन्तर विद्यालय में आने वाले शिक्षकों की क्षमतावर्धन के लिए शुरुआत में ही चार माह का प्रशिक्षण दिया जाता है। लेकिन शिक्षकों की क्षमताओं को लगातार बेहतर करने के लिए सिर्फ शुरुआत में दिया गया चार माह का प्रशिक्षण ही पर्याप्त नहीं होता है बल्कि दिगन्तर का मानना है कि शिक्षकों को भी नियमित तौर पर क्षमतवर्धन की जरूरत होती है और साथ में शिक्षक धीरे–धीरे क्षमतावर्धन करते हुए एक समय बाद अपने शैक्षणिक कर्म में स्वायत्त भी बनें यानी विद्यालय संबंधित शैक्षिक निर्णय लेने में शिक्षक सक्षम और आत्मनिर्भर बन सकें। शिक्षा के सभी पहलुओं पर उनकी समझ विकसित हो। इसके लिए दिगन्तर में विभिन्न अकादमिक कार्यशालाओं का आयोजन कर, उनमें शिक्षा की सैद्वान्तिक समझ, उपयुक्त शिक्षण सामग्री का पठन व निर्माण तथा अधिकांश शैक्षिक मुद्दों पर संवाद का काम किया गया।

शिक्षकों को बच्चों के साथ सतत रूप से शैक्षणिक काम करते हुए उनके सामने कई बार ऐसे अकादमिक मुद्दे आ जाते हैं, जिन पर उन्हें लम्बी चर्चा करने, शिक्षण सामग्री बनाने या किसी विषय क्षेत्र में समझ बनाने की बहुत आवश्यकता होती है। उन्हीं अकादमिक मुद्दों को ध्यान में रखते हुए दिगन्तर में मुख्य रूप से ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन तथा विशेष जरूरत पर अन्य कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती रही हैं।

2.4.1 ग्रीष्मकालीन कार्यशाला

शिक्षकों की क्षमतावर्द्धन हेतु एक ग्रीष्मकालीन कार्यशाला जून, 2019 में 7 से 18 तारीख तक दिगन्तर मुख्य कार्यालय के प्रशिक्षण कक्ष में आयोजित की गई। जिसमें स्कूल स्तर पर समय–समय पर आयोजित विभिन्न शैयरिंगों बैठकों में आये शैक्षणिक मुद्दों का सामुहिक समाधान तलाशने, उनके लिए सामग्री का निर्माण करने आदि के रूप में इस कार्यशाला को देखा गया। इस कार्यशाला में महत्त्वपूर्ण चर्चा कर विभिन्न विषय क्षेत्रों पर सैद्धान्तिक समझ बनाने का काम किया गया। जैसे–

- अच्छा स्कूल : अच्छा स्कूल क्या होता है ? इसकी संकल्पना की गई।
- साथ ही दिगन्तर स्कूल की विशेषताएं, शिक्षण विधा, दिगन्तर की सोच, समुदाय व स्कूल का रिश्ता। इन बातों पर चर्चा करते हुये दिगन्तर के दर्शन की रूपरेखा को प्रस्तुत किया गया।

- बच्चों में किस प्रकार से लोकतांत्रिक मूल्यों का जल्दी विकास हो सकता है। इसमें स्कूल की क्या भूमिका हो सकती है, इसको समझ कर एक साझी समझ बनाई गई।
- **सृ**जनात्मक **लेखन :** सृजनात्मक लेखन के मायने क्या हैं ? बच्चों के साथ जब हम काम करते हैं तो किस प्रकार की समस्या आती हैं ? किन–किन चीजों का प्रभाव पड़ता है ? ऐसा क्यों होता है ? हम स्वयं सृजन करते हैं तो किस प्रकार की समस्या आती है ? इसके लिए क्या करते हैं ? क्या करना चाहिए ? इस पर सुशील शुक्ल के लेख **लिखने में होना** को पढ़ा गया व इस पर बातचीत की गई।
- प्रतिदिन शिक्षिकों ने बच्चों के लिए कहानियां, कविताएं व नाटक सृजन करने का कार्य किया।
- **भाषा :** भाषा क्या है ? इसकी प्रकृति को समझा गया। वर्तमान में दिगन्तर विद्यालयों में चल रहे हिन्दी भाषा शिक्षण के पैकेज पर बातचीत करते हुये इसके अप्रोच में बच्चों के साथ मात्राओं पर काम कैसे करें इस पर समझ बनाई गई। इस सत्र में रमाकान्त अग्निहोत्री के लेख **शिक्षकों के लिए भाषा विज्ञान** को पढ़ा गया व इस पर बातचीत की गई।
- **सीखना :** शिक्षा और सीखना जिसके अन्तर्गत सीखने के मायने क्या ? कब कहें कि बच्चा सीख गया है व सीखा कैसे जाता है ? एक सत्र में इस पर बातचीत कर समझ बनाई गई।
- **गणित :** गणित की प्रकृति पर बातचीत करते हुये निम्न अवधारणाओं पर समझ बनाई गई।
  - दशमलव की अवधारणा।
  - क्षेत्रफल पर बच्चों के साथ कार्य।
- **मुद्दों पर चर्चा :**
  - सबरीमाला मंदिर व सुप्रिम कोर्ट का निर्णय
  - तीन तलाक
  - गे राईट्स
  - वे बफाई अफराध नहीं
- **निम्न लेख पढ़कर इन पर बातचीत की गई**
  - तु हिन्दू बनेगा या मुसलमान
  - शिक्षकों के लिए भाषा विज्ञान
  - बच्चों के लिए लिखना आसान नहीं
  - लिखने में होना।
- **सभा**
  - सभा के मायने क्या है ?
  - स्कूल में सभा की जरूरत क्यों ?
  - सभा कराने का उद्देश्य क्या है ?

- **समाचार** पत्रों का शिक्षण में उपयोग।
- शिक्षकों द्वारा शिक्षण हेतु बनाई गई योजनाओं का विश्लेषण कर उन पर बातचीत की गई तथा कैसे बेहतर कर सकते हैं इसे समझा गया।
- कार्यशाला के दौरान सभी संभागी जयपुर स्थित रवीन्द्रमंच पर ''आवेदन'' नाटक देखने गये।
- प्रतिदिन हस्तकार्य किया गया, जिसमें पैन स्टैण्ड, टोकरी, फोटो फ्रेम, झूमर, फूल अखबार से बॉल व वॉल हैगिंग, लेडी बेगस तैयार किये गये। एक दिन क्ले में चाक की मदद से मॉडल बनाये गये।
- प्रतिदिन लंच के बाद जो गतिविधियां की गई उनका विवरण इस प्रकार है –
  - क्या आप मेरे दोस्त बनोगे।
  - पहचानों मैं कौन हूं ?
  - शेर, दीवार व बन्दूक।
  - चलता फिरता आईना।
  - दिये गये विषय के अनुसार अभिनय करना।
  - हम तुमको लेने आये।
  - प्यारी पूसी आगे जाओ।
  - राउण्डर बल्ला।
  - बिना हाथ लगाये गुब्बारा पास करना
  - पृथ्वी पलट।
- कार्यशाला में सभी संभागियों द्वारा नाटक ''***कब होगा नया सवेरा***'' तैयार किया गया। जिसमें सभी ने भाग लिया। इस नाटक को तैयार कर जयपुर के जगतपुरा स्थित सात नम्बर चौराहे पर 18 जून 2019 को मंचन किया जायेगा। यह नुक्कड़ नाटक पानी का बचाव व साफ–सफाई कैसे व क्यों रखें इन मुद्दों पर आधारित था।
- कार्यशाला में प्रतिदिन सभा की गई जिसमें निम्न गीत व कविताएं तैयार किये गये।

पानियों की गाड़ियों में	मैं तुमको विश्वास दूं
हीरालाल माली की बाड़ी में	पंखों में आकाश समेटे
हरा समुन्दर गोपी चन्दर	हो गई है पीर पर्वत–सी
एक बिलाड़ी पाली छः	हल चलाते खेतों को मैंने ही संवारा रे
टके थे दस	दुनिया वालो, ओ दुनिया वालो
सोन चिरैया फर फर उड़कर	मां सुनाओ मुझे वो कहानी
गडमच–गडमच करतो जाये गाड़ो जुवार को	तु जिन्दा है तो जिन्दगी की जीत पर यकीन कर
एक मदारी लाया भालू	एक हमारी और एक उनकी
उचकू मेरा नाम	मशाले लेकर चलना की जब तक रात बाकी है
गाड़ी आई, गाड़ी आई, चलो भागो रे	एकला चालो रे
कहां किससे खेलू रे	चल चल रे राही

मोटूराम हलवाई वही मोटूराम हलवाई	मिलके चलो मिलके चलो रे
पी गया बाबा लस्सी का कटोरा	पौंछ कर अश्क अपनी आंखों से
लड्डू भाई गोल मटोल	बड़ी लम्बी रे मेरे दादा की मूंछ
एक छोटा–सा तोता रे	हमारे बाबा मोटर गाड़ी चलावे
ओ हवाई हप्प गप्प सुनो गप्प	चकई की चक दुम
बागों में हैं फूल खिले	

निदेशक तथा समन्वयन समूह द्वारा किये गए प्रयास से यह कार्यशाला शिक्षकों के लिए विविधतापूर्ण तथा सीखने की दृष्टि से उपयोगी रही। शिक्षकों ने भी अपने अनुभवों में इसका जिक्र करते हुए इस कार्यशाला को आगे विद्यालय में मदद के लिए महत्त्वपूर्ण बताया। इस प्रकार यह कार्यशाला शिक्षकों की उम्मीद को काफी हद तक पूरी करने में कारगर रही।

2.4.2 शीतकालीन कार्यशाला

दिगन्तर विद्यालय में शीतकालीन अवकाश के दौरान आयोजित कार्यशाला के संदर्भ में समन्वयक समूह व निदेशक द्वारा विचार विमर्श के बाद कार्यशाला में निम्न कार्यों का आयोजन किया गया –

- प्रथम चरण में इस कार्यशाला में मुख्य रूप से T.L.M. (सहायक शिक्षण सामग्री) तैयार करने का कार्य किया गया, जिससे कि आने वाले दिनों में बच्चों के साथ स्तरानुसार सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग कर बच्चों की शिक्षण में बेहतर समझ बनने में मदद भी मिली।
- द्वितीय चरण में पर्यावरण अध्ययन से सम्बन्धित सामग्री का अध्ययन किया व बच्चों के लिए उचित सामग्री का पुस्तकालय से संकल्न कर उस पर अपनी स्वयं की समझ को बेहतर किया गया।
- तीसरे चरण में सभी प्राथमिक शिक्षकों द्वारा बच्चों के साथ गणतंत्र दिवस की तैयारी को लेकर एक थीम तैयार की गई। उस थीम के आधार पर स्वयं शिक्षकों द्वारा एक नाटक तैयार किया गया ''**सबसे सस्ता गोश्त**'' जिसका मंच पर बेहतर तरीके से प्रस्तुतिकरण भी किया गया।
- भाषा हिन्दी के पैकेज में पोथियों (दिगन्तर द्वारा तैयार पुस्तकें) पर काम के तरीकों को समझा गया। जिसमें पाठ दर पाठ कैसे व क्यों काम किया जाता है इस पर एक सांझी समझ बनाई गई।
- अंग्रेजी में स्वयं बच्चों के लिए टैक्स्ट कैसे तैयार करें, इस पर शिक्षकों ने आपस में बातचीत करके कार्यशाला में कुछ छोटे–छोटे टैक्स्ट तैयार किये गये।
- शिक्षकों ने अंग्रेजी में पुस्तकालय से कहानियों का स्तर के अनुसार चयन कर किट तैयार की गई।
- उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के शिक्षकों ने बच्चों के साथ नियमित शिक्षण कार्य किया गया।
- अंग्रेजी भाषा शिक्षण पर एक चर्चा की गई। जिसमें बच्चों के स्तर, शिक्षण सामग्री व काम के तरीकों पर विस्तार से बातचीत की गई। साथ ही शिक्षकों को स्वयं की तैयारी किस प्रकार से और क्या करनी है ? इस पर विस्तार से बातचीत कर निर्णय लिए गये।

संभागियों ने विभिन्न पुस्तकें (NCERT, SCERT एवं दिगन्तर से प्रकाशित पुस्तकों का पुस्तकालय में गंभीरता से अध्ययन किया एवं उनके आधार पर बेहतर सामग्री का निर्माण किया गया। इससे शिक्षकों में स्वयं पढ़कर व साथियों की मदद से सामग्री का किट तैयार करते हुये उसके उपयोग को बेहतर तरीके से समझा गया। कार्यशाला के दौरान दिगन्तर पुस्तकालय शिक्षकों के लिए काफी उपयोगी रहा।

प्रतिदिन कार्यशाला में सभा, लंच, उसके बाद खेल गतिविधि और अन्त में दैनिक समीक्षा ने काम को दिशा देने के साथ शिक्षकों में नई ऊर्जा का संचार करने में काफी मददगार रही।

शिक्षकों के क्षमतावर्धन के नजरिये से यह कार्यशाला काफी कारगर रही। कार्यशाला के अंत में सभी शिक्षक समूहों ने अपने–अपने काम को सभी के समक्ष प्रस्तुत किया। प्रस्तुतिकरण और चर्चा से लगा कि सभी ने कार्यशाला में काफी मेहनत की है और बहुत ही गहराई से सोच–समझकर शिक्षण सामग्री विकसित की गई है। इस कार्य से शिक्षकों को आगामी योजना तैयारी और शिक्षण कार्य को बेहतर करने में मदद मिलेगी।

2.4.3 विद्यालय का माहौल व व्यवहार आधारित कार्यशाला

19 अप्रैल, 2019 को गुड फ्राइडे को बच्चों का अवकाश होने के कारण इस दिन शिक्षकों के साथ एक दिवसीय शिक्षक क्षमतावर्धन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला को समन्वयक समूह व निदेशक द्वारा समन्वय किया गया। कार्यशाला में मुख्य रूप से निम्न मुद्दों पर बातचीत कर कार्यक्रम को बेहतर दिशा दी गई।

- संवाद बेहतरी : शिक्षक व बच्चों के बीच संवाद और बच्चे एवं बच्चों के बीच संवाद।
- शिक्षक व समुदाय के बीच एवं शिक्षक व शिक्षक के बीच आपसी रिश्ता।
- शिक्षण सामग्री की देख–रेख एवं रख–रखाव।
- शिक्षकों द्वारा स्वयं के विकास हेतु किये गये प्रयास।
- बच्चों की अभिव्यक्ति का स्तर।
- अकादमिक मदद के स्तर को और कैसे बेहतर किया जाये।

2.4.4 किशोर बालिकाओं के साथ संवाद

किशोर उम्र की लड़कियों के साथ Santokba Durlabhji Memorial Hospital Jaipur से आई डॉ Sanjana Bhojwani, Head, Department of Outreach Services, SDMH द्वारा कक्षा 6वीं से कक्षा 10वीं तक की छात्राओं के साथ मासिक धर्म चक्र पर विस्तार से चर्चा की गई। इस चर्चा से बच्चों में उम्र के अनुसार होने वाले परिवर्तनों को समझने में मदद मिली। इस चर्चा में दिगन्तर कार्यकारिणी से अध्यक्ष प्रफुल्लाकुमारी जैन, निदेशक रीना दास व कॉम्यूनिकेशन समन्वयक ऋति दास धनकर शामिल रही।

2.4.5 प्राथमिक उपचार

दिनांक 17 सितम्बर, 2019 को सहयोग संस्था, जयपुर की चेयर पर्सन डॉ. माया टण्डन की टीम के द्वारा दिगन्तर विद्यालय के शिक्षकों एवं उच्च प्राथमिक से माध्यमिक स्तर के बच्चों के साथ एक कार्यशाला की गई। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य था कि सड़क दुर्घटना के दौरान कैसे घायल व्यक्ति की मदद की जा सकती है जिसे एक मानव डमी की मदद से करके बताया गया। इसके अलावा घायलों की सुरक्षा को लेकर पुलिस के साथ बातचीत करने, उसे अस्पताल पहुँचाने इन सभी के संदर्भ में क्या–क्या नियम हैं, इसके बारे में अवगत कराया गया। नियमों के संदर्भ में बच्चों को सहयोग संस्था द्वारा तैयार एक फिल्म भी दिखाई गई व बातचीत कर समझाने का प्रयास किया। यह कार्यशाला किसी घायल इंसान के जीवन को बचाने में एक मददगार की भूमिका में लोगों को तैयार कर पाने का एक प्रयास था।

कार्यशाला में सहयोग संस्था की टीम ने घायलों के प्राथमिक उपचार करने में हमारी भूमिका को काफी सरलता से समझाया गया। मुख्य रूप से एक मानव डमी के माध्यम से घायलों का उपचार प्रायोगिक रूप से समझाने के कारण सभी बच्चों व शिक्षकों ने इसको समझने में भी काफी रुचि ली।

2.4.6 पुस्तकालय का शिक्षण में उपयोग

दिगन्तर विद्यालयों में बच्चों की सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर करने एवं स्वयं समझ कर सीखने के लिए शुरुआत से ही काफी प्रयास किया जाता रहा है। इस प्रक्रिया में पुस्तकालय उपयोग की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इसी आधार पर दिगन्तर विद्यालयों में सभी बच्चों का सप्ताह में एक कालांश पुस्तकालय के लिए होता है। जिसमें पुस्तकालय प्रभारी द्वारा बच्चों को कहानी सुनाई जाती है, नई पत्रिकाओं एवं पुस्तकों से परिचय करवाया जाता है। जिससे बच्चों में पुस्तकालय के प्रति ललक एवं अधिक से अधिक स्वयं इच्छानुसार पुस्तकें पढ़ने की ओर आतुर होते हैं। बच्चे पुस्तकालय से अपनी पसन्द की पुस्तकें इश्यू करवा कर घर पर पढ़ने के लिए भी ले जाते हैं। इस सत्र में लगभग 5100 किताबें बच्चों ने इश्यु करवा कर स्वयं पढ़ी। इससे बच्चों में भाषायी क्षमताओं के विकास के साथ अपने ज्ञान में नया सृजन कर पाने में मदद मिलती है।

2.4.7 शिक्षण सामग्री निर्माण

बच्चों के साथ सीखने–सिखाने का काम करते हुए शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्रियों की जरूरत महसूस होती है। समय–समय पर स्कूल स्तर पर की गई समीक्षा बैठकों में भी शिक्षकों ने गणित और भाषा शिक्षण के लिए शिक्षण सामग्री की जरूरत को चिन्हित करवाया है। इसलिए शिक्षण सामग्री निर्माण को लेकर शिक्षकों ने 20 से 31 मार्च तक शिक्षण सामग्री तैयार करने का कार्य किया। यह कार्य सभी ने अपने घर पर किया, क्योंकि कोरोना महामारी के कारण पूरे देश में लॉकडाउन था। अतः इस समय का बेहतर उपयोग करते हुए शिक्षण सामग्री तैयार की। जिसमें विषयानुसार शिक्षकों ने स्वयं अपने समूह के स्तरानुसार शिक्षण सामग्री विकसित की गई।

2.4.8 शैक्षिक प्रगति रपट

दिगन्तर विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा प्रत्येक 6 माह में वर्ष में दो बच्चों की शैक्षिक प्रगति रपट लिखी जाती हैं। शिक्षकों द्वारा सतत मूल्यांकन के आधार पर बच्चों की समग्र प्रगति का आंकलन इस रपट में किया जाता है। जिसमें विषयवार शैक्षिक समझ के अतिरिक्त बच्चे की रुचि, जिज्ञासा, समय पालन, साथियों के प्रति संवेदनशीलता, विद्यालय के प्रति अपनत्व की भावना, विद्यालय तथा परिवार में व्यवहार इत्यादि का उल्लेख होता है। अतः यह प्रगति रिपोर्ट सिर्फ उत्तर पुस्तिकाओं के अनुसार आंकलन करने की बजाय शिक्षक द्वारा विद्यालय व समुदाय में बिताए 6 माह के अनुभवों व नियमित किये जाने वाले समग्र मूल्यांकन के आधार पर किया जाता है। यह प्रगति रपट सूक्ष्म रूप में ही सही पर बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व को दर्शाती है। शिक्षकों और बच्चों के अभिभावकों के लिए इस प्रकार की रपट काफी महत्त्वपूर्ण होती है। जिससे उनके बच्चे की रुचि, जिज्ञासा, व्यवहार और अकादमिक समझ को ध्यान में रखकर वे उनके लिए आगे की कार्यदिशा तय करने में मदद करती है। अभिभावक व समुदाय बैठकों तथा विद्यालय स्तरीय अध्ययन पूरा करके जाते समय यह प्रगति रपट शिक्षक, अभिभावक व बच्चों के लिए बहुत उपयोगी तथा महत्त्वपूर्ण होती हैं। इसलिए दिगन्तर विद्यालय में प्रगति रपट लिखने के लिए शिक्षकों को अलग से समय दिया जाता है। इस सत्र में मई व दिसम्बर में शिक्षकों द्वारा बच्चों की प्रगति रपट लेखन का काम किया गया। भविष्य के लिए प्रत्येक बच्चे की प्रगति रपट विद्यालय में उपलब्ध रहती है।

समुदाय सहयोग एवं भागीदारी

दिगन्तर विद्यालय में आस–पास की लगभग 25 ढाणियों एवं राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड की इन्दिरा गांधी नगर आवासीय योजना से बच्चे पढ़ने आते हैं। विद्यालय शिक्षक हर माह अपने समूह के प्रत्येक बच्चे के घर जाकर उसके अभिभावकों से बच्चे की प्रगति, परिवार और विद्यालय संबंधी बातचीत करते हैं। समय–समय पर अभिभावक और विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य भी विद्यालय का अवलोकन करते हैं और बच्चों से बातचीत भी करते हैं। इसके अलावा विद्यालय में समुदाय के साथ बैठकें कर विद्यालय की प्रगति और योजनाओं पर चर्चा की जाती है।

इस सत्र में विभिन्न मुद्दों को लेकर कुल 20 बैठकें अभिभावकों के साथ और 2 बैठकें विद्यालय प्रबंधन के साथ आयोजित की गई। जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

2.5.1 महिला अभिभावक बैठक

फरवरी माह के दौरान 11 ढाणियों में अभिभावकों के साथ बैठकें आयोजित की गई। इन बैठकों में विद्यालय संबंधी निम्न बिन्दुओं पर बातचीत की गई –

- विद्यालय गतिविधियों एवं बच्चों के बारे में अवगत करवाया गया।
- कम्प्यूटर शिक्षण को लेकर बातचीत की गई।
- मौसमी बीमारियों की जानकारी दी गई।
- विद्यालय के बारे में अभिभावकों के विचार जाने।
- स्कूल से अनियमित बच्चों की बातचीत की।
- बच्चों के लंच बॉक्स पर बातचीत की गई।
- बच्चों के स्वास्थ्य जांच के संदर्भ में बातचीत।
- आधार कार्ड, खून जांच की रपट आदि दस्तावेजों के संदर्भ में।

बैठकों में 12 से 16 महिला अभिभावकों को विद्यालय में किये जा रह नये कार्यों और दिक्कतों से अवगत करवाया गया। महिला अभिभावकों ने जानकरी से खुशी जाहिर की। लेकिन मुस्लिम महिला अभिभावकों ने बताया कि विद्यालय बच्चों के घर से दूर है और बच्चे 8.30 बजे तक मस्जिद से आते हैं। उसके बाद इतने कम समय में बच्चों को विद्यालय पहुंच पाने में दिक्कत आती हैं, इसलिए समय पर नहीं पहुंच पाते हैं। उनका कहना था कि वाहन की व्यवस्था तो करनी ही चाहिए। विद्यालय में कम्प्यूटर व संगीत जैसे नये कार्यों को अच्छा बताया। शिक्षकों ने बच्चों के साथ लंच का खाना भेजने तथा मौसमी बीमारियों से सावधानी के बारे भी अवगत करवाया। अनियमित बच्चों के संदर्भ में अभिभावकों ने बताया कि छोटे बच्चे इतनी दूर नहीं जा पाते हैं। समझाने पर उन्होंने बच्चों को नियमित भेजने का आश्वासन भी दिया।

इस प्रकार इन बैठकों से अभिभावकों को विद्यालय के प्रगति, समस्याओं का पता चला। शिक्षकों को भी अभिभावकों को समझने और विद्यालय के बारे में राय जानने का अवसर मिला। इनसे विद्यालय के काम में शिक्षकों को मदद मिलती है।

2.5.2 विद्यालय प्रबंधन समिति एवं अभिभावक बैठक

शिक्षा के अधिकार कानून के अनुरूप दिगन्तर विद्यालय में ***विद्यालय प्रबंधन समिति गठित*** है। जिसमें अमीना बैगम (अध्यक्ष), सलीम (उपाध्यक्ष), लालाराम (कोषाध्यक्ष), रामजीलाल (पार्षद), नसीम (छात्र), कार्यक्रम समन्वयक (सचिव), तथा 4 महिला, 3 पुरुष अभिभावक व एक शिक्षक सदस्य हैं। समिति का विद्यालय के निणर्यों में भागीदारी रहती है। समिति विद्यालय में जरूरत अनुसार मदद भी करती है। समिति के सदस्य विद्यालय में समय–समय पर आते हैं। शिक्षकों व समन्वयकों से विद्यालय संबंधी बातचीत भी करते हैं।

इस सत्र में समिति सदस्यों की कुल पांच बैठकें हुई। इन बैठकों में समिति सदस्यों को विद्यालय की प्रगति और समस्याओं से अवगत कराकर बातचीत की गई। जिसमें मुख्यतयाः दिगन्तर भावगढ़ विद्यालय के निर्माण कार्य, विद्यालय में बच्चों के आने–जाने के लिए बस की व्यवस्था करने, बच्चों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था करने इत्यादि पर विचार–विमर्श किया गया। समिति सदस्यों ने कुछ निर्णय लेकर लागू भी किये। जिन निर्णयों की क्रियान्विति नहीं हुई, उस पर बातचीत कर संबंधित साथियों को अवगत करवाया गया।

विद्यालय के लिए बातचीत करने, समस्या समाधान के रास्ते खोजने और विकास के लिए समिति ने सक्रियता के साथ भूमिका निभायी है। समिति के सहयोग से विद्यालय के लिए भवन निर्माण, मान्यता और अन्य व्यवस्थाएं कर पाने में सहायता मिली है। बस संचालन को लेकर दिगन्तर सचिव व निदेशक के साथ अभिभावकों की एक बड़ी बैठक में संस्था की वित्तीय स्थिति व बसों के संचालन पर गहराई से चर्चा हुई।

चयन, प्रशिक्षण एवं नियुक्ति

संस्था में नये कार्मिकों के चयन की एक प्रक्रिया है। जिसके लिए जरूरत अनुसार समाचार पत्रों में विज्ञप्ति प्रकाशित करना। प्राप्त आवेदनों का विज्ञप्ति की योग्यता अनुसार छंटनी करके चयनित आवेदकों को साक्षात्कार में शामिल होने हेतु आमंत्रण पत्र भेजे जाते हैं। साक्षात्कार प्रक्रिया में लिखित कार्य, समूह चर्चा और व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर चयन बोर्ड द्वारा उपयुक्त कार्मिकों का प्रशिक्षण/प्रोबेशन हेतु चयन किया जाता है।

इसी प्रक्रिया के तहत दिगन्तर विद्यालय में जून माह में सामाजिक विज्ञान के शिक्षक हेतु साक्षात्कार किया गया। इस साक्षात्कार टीम में संस्था निदेशक, कार्यक्रम समन्वयक, शाला समुदाय समन्वयक व कम्यूनिकेशन समन्वयक शामिल रहे। साक्षात्कार प्रक्रिया में शामिल होने के लिए 9 लोग आये। जिनमें से एक व्यक्ति को सामाजिक विज्ञान के शिक्षक के लिए चयन किया। इसी प्रकार जुलाई माह में अंग्रेजी शिक्षिका का भी चयन किया गया। चयन के बाद इनका प्रशिक्षण किया गया जो चार माह तक चला। प्रशिक्षण के साथ–साथ बच्चों के साथ भी कार्य किया गया।

इस सत्र में अक्टूबर माह के दौरान उर्दू शिक्षक हेतु साक्षात्कार किया गया। साक्षात्कार हेतु आये 5 लोगों में से एक व्यक्ति का उर्दू शिक्षक के लिए चयन किया गया। इस प्रकार विज्ञप्ति प्रकाशन और साक्षात्कार करने के बाद दिगन्तर विद्यालय के लिए कार्मिकों का चयन किया जाता है। दिगन्तर विद्यालयों में उर्दू शिक्षक को लेकर लगातार समस्या बनी रही है। क्योंकि विधिवत साक्षात्कार और चयन के बाद भी ज्यादातर उर्दू शिक्षक एक–दो माह से ज्यादा समय तक दिगन्तर विद्यालयों में नियमित कार्य नहीं कर पाये हैं, जिसके कारण पार्ट टाईम उर्दू शिक्षकों के द्वारा ही बच्चों के शिक्षण कार्य में मदद करवानी पड़ी।

प्रकाशन

2.7.1 बच्चों की पत्रिका बातूनी

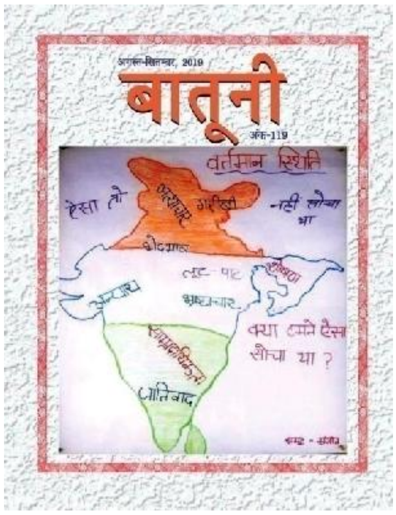

दिगन्तर विद्यालय का प्रकाशन के रूप में बच्चों के लिए और बच्चों द्वारा निर्मित ''बातूनी'' नाम की एक पत्रिका है। बातूनी में दिगन्तर विद्यालय के बच्चों द्वारा अध्ययन के दौरान रचित उनकी कला व सृजनात्मकता के कार्यों का प्रकाशन किया जाता है। इसमें जिन बच्चों की रचनात्मकता प्रकाशित होती हैं उन्हें प्रोत्साहन मिलता है और शेष बच्चों बातूनी देख–पढ़कर अपनी रचनात्मकता बेहतर करने में मदद मिलती। बच्चों की बच्चों के लिए प्रकाशित पत्रिका बातूनी के प्रकाशन में कम्प्यूटर टाईपिंग, फॉटोकॉपी तथा बच्चों की रचनात्मकता को प्राप्त करने व प्रकाशन करवाने में अन्य लोगों द्वारा मदद की जाती है। बातूनी में प्रकाशित होने के बाद बच्चों द्वारा किये गये काम को आपस में सांझा करने, उन पर चर्चाएं करने, सुझाव व समीक्षा के लिए विद्यालय में प्रदर्शित भी किया जाता है। इससे बच्चों के लेखन व रचनाओं पर आपस में संवाद होता है। जिसके कारण बच्चों की कल्पना, लेखन में रचनात्मकता में निखार को बढ़ावा मिलता है। इसी उद्देश्य के हेतु बातूनी का प्रकाशन किया जाता है। शुरुआत में इसका प्रकाशन मासिक था लेकिन वित्तीय संसाधनों के अनुसार बाद में इसे दो माह में एक बार कर दिया। इसमें बच्चों द्वारा निर्मित चित्र, कहानियां, बातचीत के अंश, अनुभव, पहेलिया, गीत, कविताएं और अपनी बात इत्यादि रचनाओं को स्थान मिलता है। इस सत्र में बातूनी के कुल 4 अंक प्रकाशित हुये हैं। जनवरी, 2021 में बातूनी का नवीनतम 121वां अंक प्रकाशित हुआ है। दिगन्तर विद्यालयों में बच्चों के लिए यह काफी पंसदीदा पत्रिका है। अधिकतर बच्चे पत्रिका के नये अंक का बेसब्री से इन्तजार करते हैं। देरी होने पर शिक्षकों से बातचीत भी करते हैं।

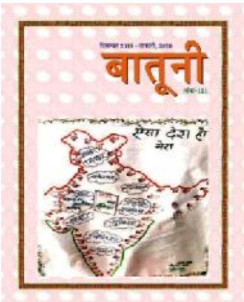

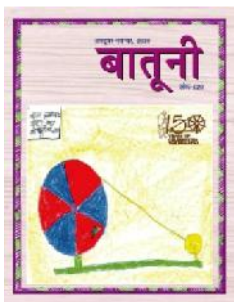

2.7.2 अन्य पत्रिका में बच्चों की रचनाओं का प्रकाशन

एकलव्य द्वारा प्रकाशित बालविज्ञान पत्रिका ***"चकमक"*** के ***मेरा पन्ना*** में भी दिगन्तर विद्यालय के बच्चों की रचनाओं को जगह मिलती रही है। इस सत्र में बच्चों की दो रचनाएं "चकमक" में छपी हैं। अन्य पत्रिका में अपनी रचनाओं को देखकर बच्चे काफी खुश होते हैं। इससे दिगन्तर विद्यालय के बच्चों का कला कार्य में काफी रुझान बढ़ा है और वे अपनी रचनाओं में भी विविधता की ओर अग्रसर होने लगे हैं।

2.8

शैक्षिक भ्रमण

2.8.1 बच्चों का शैक्षिक भ्रमण

दिगन्तर विद्यालय में हर वर्ष प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक स्तर के बच्चों को स्तरानुसार अलग–अलग स्थानों पर शैक्षिक भ्रमण हेतु लेकर जाते हैं। इस सत्र में भी बच्चों व उनके अभिभावकों से बातचीत कर समूह समन्वयक बच्चों को निम्न स्थलों को देखने–समझने हेतु भ्रमण पर लेकर गये।

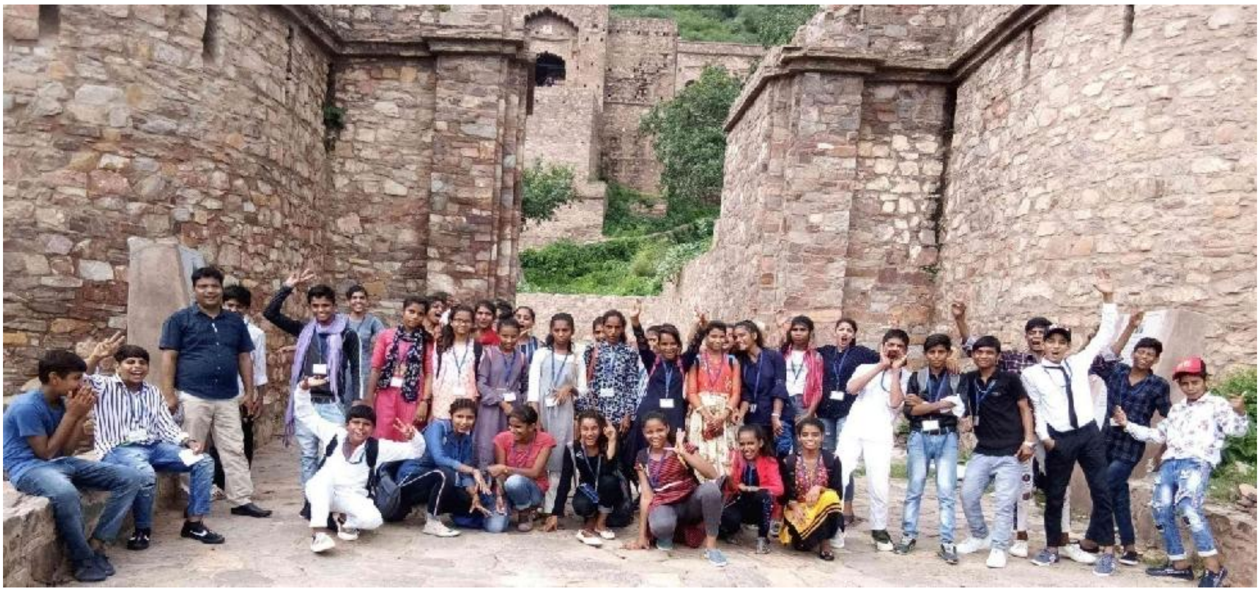

- सितम्बर, 2019 में दिगन्तर विद्यालय भावगढ से माध्यमिक स्तर के दो समूह संगीत व संकल्प भानगढ़ का किला व आभानेरी की बावड़ी का अवलोकन हेतु भ्रमण पर गये। बच्चों ने दोनों जगह का अवलोकन किया। बावड़ी व भानगढ़ के किले के इतिहास के बारे में जाना व समझा। साथ ही भानगढ़ के किले के बारे में जो उनके मिथ्य थे, उन्हें समझा। बच्चों ने भ्रमण का खूब आन्नद लिया और वापस आकर विजिट के बारे में अपने विचार भी रखे।

- अक्टूबर, 2019 में प्राथमिक से पांचवी स्तर के समूह रोशनी व उच्च प्राथमिक से अमन समूह के बच्चों को जयपुर के तारा मण्डल व अल्बर्ट हॉल का भम्रण करवाया गया। बच्चों ने दोनों जगहों का अवलोकन किया और समझने के लिए शिक्षक के साथ बातचीत की। इसी माह प्राथमिक से ही आंगन, महल व चन्दा समूह के बच्चों भी नाहरगढ़ जयपुर स्थित बायोलोजिकल पार्क में भ्रमण के लिए गये। यहां बच्चों ने जीव–जन्तुओं को देखा व उनके बारे में शिक्षकों से जाना व समझा।

- अक्टूबर, 2019 में उच्च प्राथमिक से मेहंदी व चाँदनी समूह के बच्चों को जयपुर के आमेर फोर्ट व जल महल भ्रमण के लिए लेकर गये। बच्चों ने आमेर फोर्ट क्यों बना होगा, इसके पीछे के इतिहास को समझा और उस पर शिक्षक के साथ बातचीत कर समझ बनाई। इसी प्रकार कनक घाटी व जल महल का भी अवलोकन किया। भ्रमण स्थल पर ही सभी बच्चों ने मिलकर खाना भी खाया।

भ्रमण के दौरान बच्चों के मन में काफी सवाल आये जिनका साथी शिक्षकों ने उत्तर देकर सन्तुष्ट करने का काम किया। बच्चे अपने अनुमानों से भी चीजों की व्याख्या कर रहे थे। सभी बच्चों और शिक्षकों ने काफी उत्सुकता व जोश के साथ भ्रमण किया। बच्चों की शैक्षिक दृष्टि से यह काफी महत्वपूर्ण रही।

2.8.2 शिक्षक एक्सपोजर विजिट

- 2 से 6 जून, 2019 को दिगन्तर विद्यालय के शिक्षक शैक्षणिक भ्रमण हेतु उत्तराखण्ड गये। जहां शिक्षकों ने नैनीताल, अल्मोड़ा और उसके आस–पास की प्रसिद्ध जगहों के साथ वहां स्थित आरोही संस्था का भी अवलोकन किया गया। भ्रमण के दौरान आपसी बातचीत, मिल–बैठकर घूमने व साथ में खाना खाने से शिक्षक साथियों के आपसी रिश्ते भी बेहतर हुये। इस विजिट हेतु बजट न होने के कारण संस्था की ओर से शिक्षकों को सिर्फ सवैतनिक अवकाश मिला और खर्चा शिक्षकों ने स्वयं वहन किया। शिक्षकों के अनुसार विजिट अच्छी रही। इसमें मुख्य बात यह है कि शिक्षकों व संस्था के आपसी सहयोग से यह विजिट संभव हो पाई।

2.9

अन्य संस्थाओं को शैक्षिणक मदद व भागीदारी

देश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही संस्थाओं से दिगन्तर द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे इस वैकल्पिक प्रयोग को देखने व समझने के लिए अवलोकनकर्ता आते रहते हैं। अवलोकन के बाद कुछ शैक्षणिक संस्थाएं दिगन्तर द्वारा किये जा रहे इस शैक्षिक विकल्प को अपनाने की इच्छा जाहिर करते हुए वे अपने शिक्षकों के प्रशिक्षण में मदद का प्रस्ताव रखते हैं। ऐसी संस्थाओं को विद्यालय कार्यक्रम की टीम शैक्षिक मदद करने का कार्य भी करती रही है। इस सत्र में निम्न संस्थाओं को मदद की गई।

- **4 मई, 2019** को कार्यक्रम समन्वयक द्वारा अम्बेडकर यूनिवर्सिटी दिल्ली के लिए विजिट किया गया। इस विजिट का मुख्य उद्देश्य था MA Education के छात्र जो दिगन्तर आ रहे हैं, उनके साथ फील्ड वर्क पर बातचीत करना। उनको दिगन्तर के दर्शन के बारे में अवगत करवाना। साथ ही उन्हें किस प्रकार की तैयारी के साथ आना है इस पर बातचीत की गई।
- **30 मई से 1 जून, 2019** तक दिल्ली स्थित **सलाम बालक ट्रस्ट** संस्था के शिक्षकों का प्रशिक्षण किया गया। प्रशिक्षण तीन दिन तक चला, जिसमें मुख्य रूप से निम्न बिन्दुओं पर बातचीत की गई।
    - स्कूल की अवधारणा ?
    - स्कूल में सीखने सिखाने का बेहतर माहौल कैसे तैयार किया जाये ?
    - रिश्ता : शिक्षक का बच्चों के साथ, बच्चों का शिक्षक के साथ, बच्चों का बच्चों के साथ।
    - दिगन्तर द्वारा प्रकाशन सामग्री का प्रस्तुतिकरण व उसकी अप्रोच को समझते हुये शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता पर बातचीत की गई।

- 26 से 28 जून, 2019 तक NCERT Delhi द्वारा आयोजित एक कार्यशाला में दिगन्तर विद्यालय से दो शिक्षकों ने भाग लिया। यह कार्यशाला कोरिया के बच्चों के लिए भाषा की कहानी व कविताओं का चयन कर उनको कोरिया भाषा में रूपान्तरण को लेकर थी। इसके लिए दिगन्तर की ओर से 5 से 8 कहानी व कविता का चयन कर वहां प्रस्तुत किया गया। इसके अलावा कहानियों के समेकित चयन में भी भागीदारी निभाई गई।

- 26 व 27 अगस्त, 2019 तक दिगन्तर से दो व्यक्ति Goodweave India, Meerut संस्था द्वारा आयोजित Adult Literacy Classes And Child Friendly Community Program के अन्तर्गत वहां के शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए मेरठ गये। इस संस्था द्वारा दिगन्तर से प्रकाशित हिन्दी व गणित के पैकेज का उपयोग किया जाना था अतः इन पर बच्चों के साथ कैसे काम करें ? इसके लिए दो दिन का प्रशिक्षण किया गया। एक दिन भाषा हिन्दी व दूसरे दिन गणित के पैकेज की अप्रोच पर काम करते हुए उनके शिक्षकों की दिगन्तर द्वारा प्रकाशित सामग्री के अनुसार समझ बनाई गई।

- 13 सितम्बर, 2019 को विशाखा, प्वाईंट ऑफ व्यू व महिला पॉलिटेक्निक कॉलेज ने मिलकर बाल्यखम हिल्स अफ्रीकन लेडिस द्रप की स्क्रीनिंग का आयोजन किया। इस आयोजन में दिगन्तर के सभी शिक्षक व समन्वयक शामिल रहे। आयोजन के दौरान मूवी देखने के बाद इस पर विस्तार से बातचीत की गई। शिक्षकों के लिए यह मूवी बेहतर रही।
- अजीम प्रेमजी फाउंडेशन एवं शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित एक शिक्षक सेमिनार ''गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के लिए मेरे प्रयास'' में दिगन्तर विद्यालय से शिक्षिका मंजू सिंह शामिल हुई और गुणवतापूर्ण शिक्षण के लिए मेरे प्रयास पर अपना प्रस्तुतिकरण दिया।
- 11 जनवरी, 2020 को खेजड़ी सर्वोदय सामान्य स्वास्थ्य एवं नेत्र रक्षा केंद्र के 25 साल पूरे होने पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में दिगन्तर से 6 बच्चे, एक शिक्षक 3 समन्वयक व संस्था की निदेशक शामिल रही। कार्यक्रम में दिगन्तर विद्यालय के बच्चों द्वारा गांधी जी का एक गीत **''वैष्णव जन तो तैने कहिए''** प्रस्तुत किया गया। खेजड़ी का शुरुआत से ही दिगन्तर विद्यालय के बच्चों के स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों में अच्छा सहयोग रहा है। इस सहयोग के अनुसार बच्चों के स्वास्थ्य की निःशुल्क जांच करना व सामान्य बीमारियों की दवाई देना शामिल रहा है। इसके अलावा शिक्षकों के साथ स्वास्थ्य संबंधित फस्ट एड कार्यशालाएं करना भी शामिल रहा है। खेजड़ी सर्वोदय संस्थान का इस सहयोग के लिए दिगन्तर परिवार तहेदिल से आभार व्यक्त करता है।
- 25 से 26 फरवरी, 2020 को दिगन्तर से दो समन्वयकों ने तिलोनिया की विजिट किया। इसके विजिट के अन्तर्गत दोनों दिन तिलोनिया में संचालित स्कूल शिक्षा निकेतन का अवलोकन किया गया। यह अवलोकन मुख्य रूप से स्कूल में शिक्षा के स्तर को समझकर और बेहतर कैसे किया जा सकता है इसके संदर्भ में था। अवलोकन की एक रपट तैयार की गई, जिसके आधार पर आगे की योजना तैयार होगी।

इंटरशिप हेतु विद्यालय आये छात्र–छात्राएं

- अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली से 9 छात्राओं का एक समूह आया जो 20 दिन दिगन्तर में शिक्षक क्षमतावर्धन कार्यशाला में शामिल रहा है।
- Imperial College uk से आक्षी गुप्ता दिगन्तर स्कूल आई। इसने बच्चों के साथ कला में विभिन्न मॉडल तैयार करने का कार्य किया।

- Whit Gift School uk से दिव्या गुप्ता दिगन्तर आया। इसने विज्ञान में बच्चों के साथ विभिन्न प्रयोग किये।
- Tata Institute of Social Sciences से दिक्षा रहेल दिगन्तर स्कूल 10 दिनों के लिए आई। इन्होंने दिगन्तर के दर्शन को समझा व बच्चों में किस प्रकार से लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास किया जाता है, इस पर रिसर्च की गई।

पूरे साल दिगन्तर विद्यालय में 49 संस्थाओं से 226 मेहमान अवलोकन करने आये जिन्होने दिगन्तर की शिक्षण विद्या व दर्शन को समझा।

2.11
चुनौतियां और लक्ष्य

2.11.1 चुनौतियां

- खो रैबारियान शाला की जमीन के दस्तावेज उपलब्ध न होने के कारण जरूरी भौतिक सुविधाओं में से एक बिजली की व्यवस्था अभी तक नहीं हो पाई है। बिजली की व्यवस्था न होने से गर्मियों में बच्चों को काफी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा हैं।
- विद्यालय संचालन में अभी वित्तीय संकट बना हुआ है, इसके लिए प्रयास किये जा रहे हैं।
- शाला स्तर पर आयोजित होने वाली गतिविधियां जो बच्चों के सीखने–सिखाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं जैसे बाल मेला, कला प्रदर्शनी, विज्ञान मेला, वार्षिक उत्सव आदि का आयोजन वित्तीय संकटों के कारण ठीक से न हो पाना।
- इस वित्तीय वर्ष के अंत में कोरोना महामारी के कारण बच्चों का शिक्षण कार्य प्रभावित रहा।

2.11.2 आगामी लक्ष्य

- माध्यमिक स्तर पर **शिक्षाक्रम विकसित** करना।
- **उच्च माध्यमिक स्तर तक मान्यता** के लिए आवेदन प्रस्तुत करना।
- बच्चों की पत्रिका **बातूनी व न्यूज लैटर** का नियमित प्रकाशन करना।
- लक्ष्य अनुरूप विद्यालय में **नये बच्चों को जोड़ना।** दिगन्तर विद्यालय के आस–पास के क्षेत्र के अलावा भी शिक्षा से वंचित बच्चों को विद्यालयों में प्रवेश हेतु कोशिश करना।
- **विद्यालय में आवश्यकतानुसार नये शिक्षकों** की तलाश कर उनका प्रशिक्षण करना।
- विद्यालयी गतिविधियों का **वार्षिक कलैण्डर** बना कर उसके अनुरूप कार्यक्रम संचालित करना।
- शिक्षकों का क्षमतावर्द्धन के लिए आवश्यक कार्यशालाएं व शेयरिंग बैठकें करना।
- राष्ट्रीय उत्सव, प्रदर्शनी, बाल मेला, वार्षिक उत्सव इत्यादि का आयोजन करना। **इत्यादि।**

❑❑❑

3

शिक्षा विमर्श

दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति की शुरुआत 1978 में एक छोटे से वैकल्पिक स्कूल के रूप में हुई थी। शुरुआती 10 वर्षों तक वैकल्पिक तरीके से स्कूल चलाने के बाद वर्ष 1986 में दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति (तत्पश्चात दिगन्तर) को औपचारिक रूप से 'सोसायटी पंजीकरण अधिनियम 1958' के तहत पंजीकृत करवाया गया। दिगन्तर द्वारा वर्ष 1998 से शिक्षा विमर्श का प्रकाशित किया जा रहा है।

1988 से दिगन्तर, जयपुर के बाहरी क्षेत्र में स्थित अपने स्कूलों और अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहा है। शिक्षा विमर्श इसके आकांक्षी कार्यक्रमों में से एक रहा है।

दिगन्तर ने मार्च 1998 में शिक्षा विमर्श को प्रकाशित करना शुरू किया। यह वह समय था जब भारतीय शिक्षा प्रणाली में तेजी से बदलाव हो रहे थे। 1990 के दशक के बाद सरकारी और गैर–सरकारी संगठन हर बच्चे तक पहुंचने और उन्हें शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए प्रयास कर रहे थे और यह औपचारिक प्रणाली यानी स्कूल और अनौपचारिक केन्द्रों के माध्यम से किया गया था। इस उद्देश्य के लिए सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा कई प्रकार के स्कूल स्थापित किए गए थे। इस अवधि के दौरान पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षाशास्त्र, शिक्षकों के ज्ञान और शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न मुद्दों पर कई महत्वपूर्ण सवाल उठाए गए थे।

उपरोक्त परिदृश्य में दिगन्तर ने अनुभव किया कि देश में बड़ी संख्या में हिंदी बोलने वाले लोगों के बावजूद हिंदी में अच्छे शैक्षिक साहित्य और पत्रिकाओं की कमी है। इस रिक्तता को भरने और शैक्षिक संवाद शुरू करने के लिए शिक्षा विमर्श को प्रकाशित करने का विचार अस्तित्व में आया।

शिक्षा विमर्श का प्रकाशन इस धारणा पर आधारित है कि शिक्षा न तो केवल सिद्धांत पर आधारित हो सकती है और न ही कर्म (शैक्षिक अभ्यास)। शिक्षा के क्षेत्र में सिद्धांत और अभ्यास के बीच निरंतर संवाद की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ है कि शिक्षा में सिद्धांत और जमीनी अनुभवों के बीच संश्लेषण को स्थापित करने की आवश्यकता है। शिक्षा विमर्श ने पिछले 22 वर्षों की अवधि के दौरान हिंदी में गंभीर शैक्षिक साहित्य का संकलन किया है (हाल ही में मार्च में 2020 में शिक्षा विमर्श ने अपने प्रकाशन के 22 वर्ष पूरे किए हैं)। इसने शैक्षिक नीतियों, पाठ्यक्रम सिद्धांतों, शिक्षाशास्त्र पर महत्वपूर्ण साहित्य का प्रकाशन किया है और पाठकों के साथ जमीनी अनुभव भी साझा किए हैं।

प्रारंभ में दो वर्षों के लिए यह पत्रिका मासिक आधार पर प्रकाशित की गई थी, लेकिन 2001 के बाद से इसे द्वि–मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जाता रहा है। वित्तीय सहायता के संदर्भ में कई उतार–चढ़ाव के बावजूद 22 वर्षों की अवधि के दौरान शिक्षा विमर्श का प्रकाशन जारी है।

3.1 पत्रिका की पहुंच और फोकस

पत्रिका में समकालीन शैक्षिक विचार और व्यवहार, नीतियों, समस्याओं, अध्ययन, शोध और पुस्तक समीक्षा से संबंधित मुद्दों को एक व्यापक परिदृश्य में रखते हुए अपने पाठकों को इनके बारे में जागरूक करती रही है।

शिक्षा विमर्श ने समकालीन शैक्षिक बहस और महत्व के मुद्दों पर कई विशेषांक प्रकाशित किए हैं जैसे 'पब्लिक–प्राइवेट पार्टनरशिप', 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम', 'राजस्थान राज्य में नव विकसित पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा', 'राजनीति शास्त्र', 'शैक्षिक मुल्यांकन' आदि; जिन्होंने शिक्षा की तत्तकालीन बहस को काफी प्रभावित किया है। इसके अलावा शिक्षा पर दार्शनिक, समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों पर अंक प्रकाशित हुये हैं, जैसे 'बाल साहित्य', 'गणित का शिक्षाशास्त्र', 'नीलबाग स्कूल', 'इतिहास शिक्षण' और 'शिक्षा का समाजशास्त्र' (दो भागों में)।

शिक्षा विमर्श के पाठकों में शिक्षक, शिक्षक–शिक्षा से जुड़े लोग और शैक्षिक कार्यकर्ता शामिल हैं। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का उपयोग सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षणों, सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा संचालित कार्यक्रमों और कार्यशालाओं में लगातार किया जाता रहा है। पत्रिका ने अपने प्रकाशन के वर्षों के दौरान हिंदी भाषी क्षेत्रों में एक विशिष्ट स्थान बनाया है। शिक्षा विमर्श में प्रकाशित लेखों का उपयोग शिक्षकों और छात्रों द्वारा हिंदी भाषी क्षेत्र में विश्वविद्यालयों में भी किया जाता है।

पत्रिका का एक प्रमुख योगदान यह है कि यह अनुवाद के माध्यम से भी हिंदी में नवीनतम विश्वव्यापी शैक्षिक आलेख पाठकों को उपलब्ध करवाती रही है।

3.2 प्रसार और सदस्यता

समय–समय पर शिक्षा विमर्श ने अपने प्रकाशन को जारी रखने के लिए विभिन्न फंडिंग संगठनों से धन प्राप्त किया है। लेकिन अप्रैल, 2018 के बाद से पत्रिका को कोई वित्तीय सहायता नहीं मिली है इसके बावजूद प्रकाशन जारी रखा है। शिक्षा विमर्श के प्रकाशन को बनाए रखने के लिए हमारी टीम निरंतर प्रयास कर रही है। विभिन्न फंडिंग संगठनों को प्रस्ताव भेजे गये परन्तु अभी तक वित्तीय सहयोग कहीं से भी नहीं मिला। वर्ष 2015 से शिक्षा विमर्श ने अपने लिए धन जुटाने के लिए पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित करना शुरू किया है।

इस वित्तीय वर्ष के दौरान प्रसार और सदस्यता की स्थिति निम्नानुसार है–

प्रकाशित अंक (माहवार)	बन्द[1] सदस्य	रिन्यू/पुनःशुरू[2] सदस्य (±)	नये जुड़े सदस्य	पाठक प्रतियां	APF को भेजी प्रतियां	कुल[3] भेजी प्रतियां
जनवरी–फरवरी, 2019	0	37	16	498	531	**1029**
मार्च–अप्रैल, 2019	0	20	11	428	648	**1076**
मई–जून, 2019	0	54	17	511	318	**829**
जुलाई–अगस्त, 2019	0	32	20	465	551	**1016**
सितम्बर–अक्टूबर, 2019	यह अंक प्रकाशन की प्रक्रिया में है...					**------**

1 जो लंबे समय से नवीनीकृत नहीं हुए हैं, उनकी सदस्यता समाप्त कर दी गई है।
2 नियमित नवीनीकरण और पुनः शुरू की सदस्यता को फिर से शुरू करने वाले सदस्य।
3 वर्तमान अंकों की बिक्री के कुल सदस्यों की संख्या।

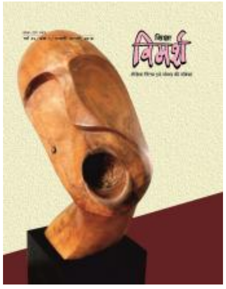

जनवरी–फरवरी,., 2019

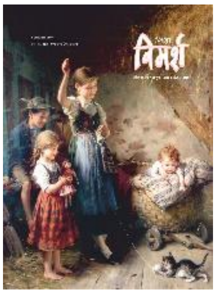

मार्च–अप्रैल,. 2019

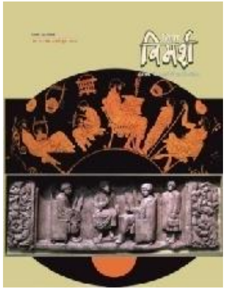

मई–जून,. 2019

जुलाई–अगस्त, 2019

प्रकाशन की प्रक्रिया में है...

सितम्बर–अक्टूबर, 2019

वर्ष 2019–20 के दौरान शिक्षा विमर्श के कुल चार अंक प्रकाशित हुए हैं। इस वित्तीय वर्ष के दौरान, पत्रिका ने कुल **2,87,869** रुपये की राशि सदस्यता, नवीनीकरण, विज्ञापन और अंक बेचकर प्राप्त की है। अजीम प्रेमजी फाउंडेशन नियमित रूप से पत्रिका के अंकों की खरीददारी करता रहा है (प्रत्येक अंक की लगभग 400–500 प्रतियां)। इसके अलावा पत्रिका के पुराने संस्करणों का भी बेचान किया गया है।

3.3 चुनौतियां

- शिक्षा विमर्श को अप्रैल, 2018 के बाद से कोई वित्तीय सहायता उपलब्ध नहीं है। कई फंडिंग एजेन्सियों से प्रपोजल के आधार पर वित्तीय अनुदान के संबंध में संवाद जारी हैं।
- मई–जून, 2019 अंक के बाद से संपादक का पद भी रिक्त है। इसलिए पत्रिका का प्रकाशन गम्भीर रूप से बाधित हुआ है।
- हिंदी में अकादमिक लेखन की गुणवत्ता की स्थिति अपेक्षा अनुरूप नहीं है और हिंदी में प्राप्त बहुत कम लेख ही शिक्षा विमर्श की गुणवत्ता को पूरा करते हैं। प्रकाशन की वित्तीय लागत और अनुवाद की दर को पूरा करने के लिए प्रत्येक अंक को प्रकाशित करना कठिन होता जा रहा है। अनुवादक अनुवाद की दर को बढ़ाने की मांग कर रहे हैं। उच्च दर की अनुपस्थिति में कई अच्छे अनुवादकों ने अनुवाद के लिए इनकार कर दिया है।
- मूल लेखों के शाब्दिक अनुवाद चुनौतीपूर्ण हैं और ट्रांस–क्रिएशन में अधिक समय लगता है।
- पिछले बाईस वर्षों से विमर्श प्रकाशित हो रही है, लेकिन हमेशा गुणवत्तापरक लेख प्राप्त करना एक बड़ी चुनौती रही है। उन लेखकों की बहुत कमी है जो सैद्धांतिक आयामों पर चर्चा करते हुए व्यावहारिक अनुभवों को शामिल करके या उनके आधार पर लेख लिख रहे हैं। इसलिए पत्रिका काफी हद तक अंग्रेजी में लिखे लेखों के अनुवाद पर निर्भर करती है।

❑❑❑

4

संदर्भ सहायता इकाई

संदर्भ सहायता इकाई का दिगन्तर के सभी कार्यक्रमों को बेहतर तरीके से संचालन एवं सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस इकाई का मुख्य कार्य संस्था के समस्त कार्यक्रमों को नियमित प्रशासनिक और व्यवस्थात्मक मदद मुहैया कराना है। इस इकाई के मुख्य कार्य इस प्रकार से हैं :–

- संस्था की आय–व्यय का लेखांकन एवं वित्तीय प्रबंधन।
- शिक्षकों व बच्चों के लिए पुस्तकालय का संचालन।
- स्टोर संचालन जिसमें सामग्री खरीद व उपलब्ध कराने की व्यवस्था।
- संस्था के कैम्पस की सार–संभाल, सुरक्षा और मेहमानों के लिए आवास व्यवस्था।
- आवासीय प्रशिक्षणों के दौरान मैस में भोजन की बेहतर व्यवस्था करना।
- संस्था में कार्मिकों के चयन व नियुक्ति के साथ उनके संस्थापन आदि के कार्य करना। संस्था के सभी कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का समन्वयन तथा सहयोग करना। इस इकाई का मुख्य काम है ताकि सभी कार्यक्रम अपने लक्ष्य व उद्देश्यों के अनुरूप बेहतर उपलब्धियां हासिल कर सकें।
- वर्तमान में संचालित तीन कार्यक्रम दिगन्तर विद्यालय, शिक्षा विमर्श व फाउण्डेशन कोर्स को नियमित रूप से मदद करना।

दिगन्तर के मुख्य कैम्पस में स्थित केन्द्रीय पुस्तकालय में कुल 8,918 पुस्तकें हैं। इस पुस्तकालय द्वारा वर्ष 2019–20 में नई किताबों की खरीद की, उनका रजिस्टर में इंद्राज किया गया और दिगन्तर कार्यकर्ताओं के लिए पुस्तकों का नियमित लेन–देन का कार्य किया गया। पुस्तकालय प्रभारी द्वारा प्रत्येक वर्ष दिगन्तर के मुख्य पुस्तकालय तथा दो अन्य कार्यक्रमों की पुस्तकों का भौतिक सत्यापन कर रपट तैयार की गई।

लेखा शाखा द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी खाता बुक तैयार करना, जिसमें खाताबही, बैंक बुक, नकद बुक, अंतिम खाते इत्यादि शामिल हैं। विभिन्न कार्यक्रमों की वित्तीय और ऑडिट रपट तैयार की गई। साथ ही संस्थागत कार्यकर्ताओं का नियमित वेतन बनाने, उसका रिकॉर्ड रखने तथा भविष्य निधि एवं आयकर नियमों के तहत आयकर काटने, जमा कराने और मासिक रिर्टन भेजने के कार्य नियमित तौर पर किए गए। संस्था के कार्मिकों की व्यक्गित विवरण फाईलों का रख–रखाव करना तथा कार्मिकों के द्वारा समय–समय पर चाही जाने वाली सूचना उपलब्ध करवाना, आवश्यकता अनुसार विमर्श व अन्य कार्य करना।

दिगन्तर में एक केन्द्रीय भण्डारण है जो सभी कार्यक्रमों के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसमें साल भर विभिन्न कार्यक्रमों के लिए सामग्री खरीद एवं जरूरत के हिसाब से वितरण कार्य चलता है, जिसका लेखा–जोखा भी रखा जाता है। इस वर्ष भी स्टोर में स्थायी और अस्थायी सामग्री खरीदने और

निर्गमन के कार्य नियमित रूप से किया गया। इसके साथ ही स्टोर प्रभारी द्वारा वर्ष में एक बार संस्था के कार्यक्रमों की समस्त वस्तुओं का भौतिक सत्यापन किया गया। नये उपकरण खरीदने के साथ पुराने उपकरणों को भी दुरुस्त रखना और उनकी सार–संभाल रखना मुख्य कार्य है।

संदर्भ सहायता **इकाई का एक अन्य कार्य** दिगन्तर कैम्पस की सुरक्षा एवं उसकी व्यस्थाएं रखना है। दिगन्तर में आयोजित होने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों में आने वाले सहभागियों के लिए रहने एवं खाने की व्यवस्था की गई तथा नियमित रूप से कार्यरत कार्यकर्ताओं के लिए उपयुक्त व्यवस्थाओं की देखभाल करना भी किया गया। यह शाखा नियमित रूप से साल भर व्यवस्थित तरीके से यह इंतजाम करती रही है। संस्थागत अन्य सभी कार्य (यात्रा आरक्षण, फॉटो कॉपी या बाजार संबंधी काम आदि) समय पर पूरे किए गए। इस इकाई का कार्य संस्था में नई नियुक्तियों के लिए आवश्यक कदम उठाना तथा उनका संस्थापन करना है। आने वाले मेहमानों के लिए रहने व खाने की पूर्ण व्यवस्था इस इकाई के द्वारा की गई हैं।

4.1 मैस की व्यवस्था

वर्ष 2019–20 के अन्तर्गत मैस का संचालन पूरे वर्ष नियमित रहा। इसके द्वारा दिगन्तर कार्मिकों, कार्यशालाओं और कोर्स व विद्यालय अवलोकनार्थ आने वाले मेहमानों के लिये ही खाने की व्यवस्था की जाती है। यहां पर एक साथ 50 से 55 लोगों की रहने खाने की व्यवस्था हो सकती है।

वर्ष 2019–20 में आने वाले मेहमानों का विवरण निम्न प्रकार है, जिनके रहने–खाने की व्यवस्था की गई –

क्र.सं.	संस्था का नाम	मेहमानों की संख्या
1.	अम्बेडकर विश्वविद्यालय	9
2.	जिसस एण्ड मेरी कॉलेज	54
3.	Institute of Home Economic	56
4.	माता सुन्दरी कॉलेज	52
5.	हरियाणा सरकार के शिक्षक, प्रशिक्षण हेतु	500 (लगभग)
6.	फाउंडेशन कोर्स के अन्तर्गत आये सहभागी	

❑❑❑

5

Foundation of Education

5.1 Introduction

This is a course offered annually to the practitioners in the field of Education or whoever is interested to engage with the theory crucial to understand education. It explores fundamental principles of philosophy, sociology and psychology which form the basis of education. It is conceptualised as building basic ground for further thinking in education. This course addresses the common basis required by almost everyone in education: teachers, teacher educators, curriculum planners, textbook writers, researchers. They are also needed for interpreting policies and programmes.

The course content consists of 14 modules which are selected based on them being fundamental or contemporary ways of thinking and issues in education. These are the kinds which need to be kept in mind when working in education in any time period and in any context. While the modules introduce the participants with the multiple essential domains they also demonstrate how thinking and analysis happens in the respective domain.

5.2 Objectives of FoE[1]

The following are the objectives of the courses as were articulated earlier:

1. Initiate the participants into serious educational thinking through as wide a theoretical framework as possible.
2. Make every attempt to convince people that education is a serious business and every action needs to be thought through.

[1] Taken from the concept note of FoE created by Rohit Dhankar

3. Acquaint people with most fundamental concepts, ideas (that includes theories) and ways of thinking in education.
4. Convince people that educational practice necessarily requires theories, articulated or assumed in unawareness. Along with it, also that it is better to be functioning with this articulation rather than unawareness.
5. Awaken the desire and the courage in people to think and take their own thinking seriously.

5.3 The *reading material*

The reading materials for the workshops has been created keeping in mind that the participants are not active readers of dense academic texts. Hence, text in simple language which conveys the concept has been put in the reading material.

It has been a challenge to find all the readings in Hindi language and make them available to the participants. There have been a few instances in which because of unavailability of the text in Hindi the participants had faced challenges to understand the text.

5.4 Progress *so far*

This year, 2019, Digantar offered two cycles of FoE course. One started in January and other in April. There were the twelfth and the thirteenth cycle of FoE. Information about the two batches regarding dates, the resource persons and no. of participants is given in the tables below.

FOE 12 Batch				
S. no.	**Module**	**Dates**	**Resource Persons**	**No. of participants**
1	Introduction to Education	17-19th January	Rohit Dhankar	8
2	Philosophy of Education	20-22nd January	Rohit Dhankar	8
3	Sociology of Education	24-26th January	a) Rohit Dhankar b) Amman Madan c) Manoj Kumar	8
4	Perspectives of Learning	4-6th March	Shipra Suneja	6
5	Human Understanding and Curriculum	7-10th March	Varadarajan Narayanan	6
6	Assessments of Education	12-14th March	Rishikesh	6

FOE 13 Batch				
S. no.	**Module**	**Dates**	**Resource Persons**	**No. of Participants**
1	Introduction to Education	22-24th April	Rohit Dhankar	23
2	Sociology of Education	25-27th April	Amman Madan	23
3	Philosophy of Education	29th April-1st May	Rohit Dhankar	23
4	Perspectives of Learning	17-19th June	Shipra Suneja	20+9=29
5	Human Understanding and Curriculum	20-23rd June	Rohit Dhankar	20+9=29
6	Assessments of Education	25-27th June	Rohit Dhankar	20+9=29

5.5 General Comments

1. In the second workshop of FoE13 batch, which happened in June, apart from the registered participants of the course the students from Ambedkar University, Delhi also participated. This was part of their summer internship fieldwork. Out of these nine students, five are studying MA Education and four were part of the MA Early Childhood Care and Development programme.
2. The FoE12 batch was as small as eight people and for their third workshop scheduled in May only four or five had sent their confirmation to attend. Hence, after asking the participants of the batch, it was decided that they will join the FOE13 group for third workshop which will happen in August and from henceforth they two batches will run together. This decision was taken on the basis of the understanding that a larger group will have richer discussions which will be better for the FoE12 batch's participants' overall learning.
3. The course document as well as the concept note of FoE had mentioned that there will be an assessment component attached to each module which will be graded and based on that certificates will be created for the participants. However, so far that hasn't happened.
4. Although, the Digantar Library stays open for the participants during the workshops, it has been seen that it is not being used by them.

5.6 Brief plan for the rest of the year

The third workshop for each batch, now being held together, is scheduled from 5th August to 10th August. The modules which this includes are: Ideas in Education and Teacher Education. After this one, the fourth workshop is scheduled in October and the final one in December. The

last two workshops will have: pedagogy modules on science, math, language and social studies, one module on action research and another on Digantar Vidyalay.

Currently, the plan for the next year's FoE course is also under construction. There will be two cycles, same as this year. It is also being tried that if possible, the each cycle is offered in different language medium. This means that one will be in English and another in Hindi. This was it is hoped that the participants will be able to choose either of the cycles based on their level of comfort with each language.

5.7 Pedagogical Workshops

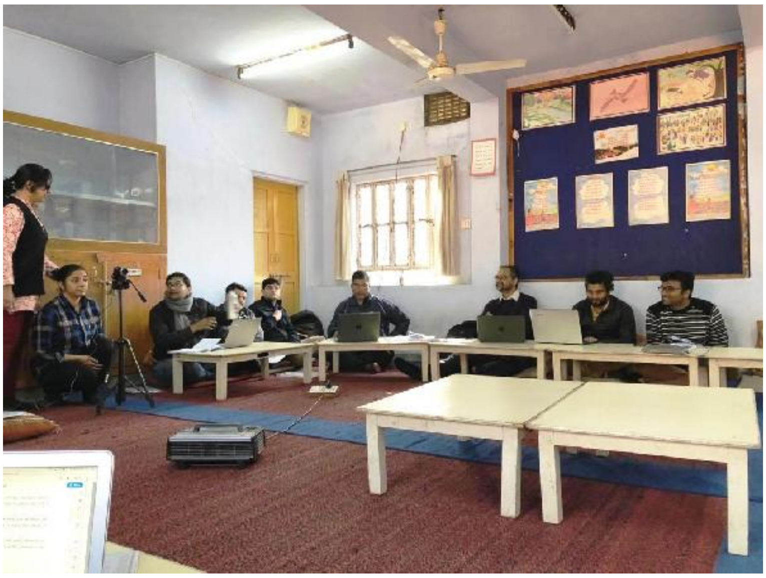

Haryana State Government has initiated a long term project with the DIET teacher trainers and subject experts. As part of this project pedagogical trainings are being organised in Digantar. These trainings are being conducted by Digantar's academic unit.

The purpose and structure of these workshops were both discussed with the Training Management Cell of Directorate School Education, Haryana. Some decisions taken based on that discussion are as follows:

1. Workshops would be on subject specific pedagogy. This means that separate workshop will be held for each subject in the curriculum.
2. The subjects on which workshops are to be organised are:
    a. Pedagogy of Hindi,
    b. Pedagogy of English,
    c. Pedagogy of Mathematics,
    d. Pedagogy of Science,
    e. Pedagogy of Social Studies, and,
    f. Pedagogy of Art.

3. Maximum number of participants in each workshop will be 40.
4. Duration for each workshop will be 7 working days.
5. Time distribution would be roughly 2 days for theory, 2 days for primary, and 2.5 days for upper primary, and half a day for summing up.

5.8 Objectives of the workshops

Based on the assumption that the participants have requisite content knowledge and around 7-8 years of teaching experience, the the workshops are primarily dealing with the necessity to develop the capabilities, knowledge and attitude which are needed to work with children of different age groups, to understand the nature of the knowledge in that specific discipline, to be able to build upon the cognitive capabilities of the child etc.

The objectives are mentioned briefly below:

1. Provide some examples of what good grasp of content knowledge mean.
2. Understanding the nature of subject knowledge.
3. Understanding children’s ways of learning the subject in question.
4. Ability and inclination to form conducive relationship with children.
5. Ability to start from where the child is, and progress to accepted knowledge.
6. Situating the subject knowledge in school curriculum, child’s life, human social needs and human life in general.
7. Respecting other human beings.
8. Accepting one’s own limitations in terms of knowledge and abilities.
9. In brief, learning reflective practice.

5.9 Content of the workshops

The actual content knowledge will be selected in the following categories:

1. Elementary Education in democratic society.
2. Rationale behind Elementary Education curriculum, Haryana curriculum in the light of that rationale.
3. Human Knowledge and nature of knowledge in Subject X. (X can be substituted by any one of Hindi, English, Math, Science, Social Studies and Art)
4. Place of X in the curriculum and Human life.
5. A set of activities and TLM to teach selected key concepts from curriculum and textbooks used in Haryana.
6. How to prepare teaching plan for a topic/concept.
7. Engaging with the school textbooks of Haryana to analyse them and think of how to use them.

5.10 Reading material

Preparation of each workshop includes creation of a compendium which contain the core readings of the workshop. These readings are selected on the basis of the relevance of their content, length, complexity and language. Apart from this, any other material needed is also taken note of so that those can be made available to the participants and the resource persons when needed.

5.11 The project so far

There have been four such workshops which have been conducted on the subjects: math, science, social studies and English language. The table below contains the details of them.

Along with the participants, three to five people from Training Management Cell of the education department of Haryana have also been present in all the workshops.

S.no.	Subject	Dates	Resource Persons	No. of participants
1	Mathematics	15-21st February	a) Rohit Dhankar b) Swati Sircar	36+5
2	Science	28th March-03rd April	a) Rohit Dhankar b) Anshu Mala+ 3Team Members	35+3
3	Social Studies	8-14th April	a) Rohit Dhankar b) C n Subramaniam	37+3
4	English	22-28th May	a) Rohit Dhankar b) Rajesh c) Giridhar Rao	41+3

The following can be said about the workshop based on the four workshops that have happened yet:

1. The duration of the workshops gets reduced to six days or in a couple of cases even five and a half days. This is because the participants desire a day off from the workshops to be able to visit Digantar Vidyalay and then keep the second half of the day for visiting Jaipur. This has led to frequent changes the initial plan made for the workshops.
2. Not all participants had been DIET faculties. A few have been primary school teachers who had voluntarily showed interest in the workshops and had been hence brought here.
3. It has been found that the DIET faculties have not been teaching in schools for a long time. It was also discovered that they are also not acquainted with the current textbooks of primary and upper primary level.
4. Although, the Digantar Library stays open for the participants during the workshops, it has been seen that it is not being used by the participants. Once, because of a math task a few people visited to issue a book.
5. Assessment: It was planned that the workshops will also contain assessment component on which they will also get certificate from the Haryana Department. The assessments and feedback do happen at the end of the workshop but they haven't been looked at properly. It is not certain if the promise of certificate is being followed up or not.

5.12 Brief plan for the rest of the year

In the coming months another eight workshops are scheduled with the similar objectives and structures.

1. July : Hindi
2. August: Science, Math
3. September: Social Studies
4. October: English
5. November: Hindi, Art 1, Art 2

5.13 NIOS Textbook review and revision project

Digantar was approached to send a proposal for the review of the textbooks followed by their revision by UNICEF and National Institute of Open Schooling (NIOS). Both the tasks, review and revision, have to be undertaken keeping in mind the self-learning nature of open schooling education. The team from UNICEF and NIOS has been sent the initial plan for the entire project along with the possible expenditure. The project will commence when the confirmation is received

❑❑❑

DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHELKUD SAMITI, JAIPUR
BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH 2020

Amount as at 31.03.2019	LIABILITIES		Amount as at 31.03.2020	Amount as at 31.03.2019	ASSETS		Amount as at 31.03.2020
	GENERAL FUND				**FIXED ASSETS (As per Schedule A)**		
36,218,299	Opening Balance as on 1.4. 2019	36,134,210		33,464,154	W.D.V. As on 1.4.2019	32,891,403	
0	Less:Adjustment for Last Year closing Stock/FDR (Note : 2)	472,733					
		35,661,477					
2,259,200	Add: Utilised Corpus Fund			737,076	Add: Addition during the year	116,871	
(23,43,289)	Less:Surplus/ Deficit Transfer from I & E A/c	(3,755,352)	31,906,125	10000	Less:Sale Of Assets During The	26,750	
36,134,210				34,191,224	WDV as on 31.03.2020	32,981,524	
	UNSPENT GRANT			1,299,821	Less: Depreciation	1,231,104	31,750,420
1,483,124	PHF Programame	1,483,124		32,891,403			
1,456,128	APF TARU Programme	1,456,128					
2,592,852	Wipro TEP Programme	2,592,852			**ADVANCES**		
3,863,899	Dir. School, Edu. Haryana	-	5,532,104		**CURRENT ASSETS**		
9,396,003				18425	**CASH IN HAND(As per Schedule D)**		42,958
	CORPUS FUND						
	Donation for Construction -						
2,121,200	Previous Year				CASH AT BANK (Scheduled Bank)		
-2,121,200	Less: Utilised Fund and Transfer to General Fund		-	2,385,418	Core Programme	2,886,143	
138000	Grant in Aid from Rajiv Gandhi Foundation	-		2,952,854	FCRA	1,633,349	4,519,492
-138000	Less: Utilised Fund and Transfer to General Fund						
	LOANS & ADVANCES			79,132	TDS Receivable		152,097
770000	**Unsecured loan (As per Schedule C)**		770,000	41,679	Sundry Debtors		172,104
				469,026	Closing Stock of Books (Certified By Management)		375,627
	CURRENT LIABILITIES			4204	Telephone Security		0
22,660	Duties And Taxes		24,110	0	IT Demand For AY 2017-18		400000
289,749	Creditors for Staff		921,049		**INVESTMENTS**		
209,858	Creditors for exp.		470,607	7,696,496	Fixed Deposit	1,913,731	
42,295	TDS Payable		49,464	326,138	Fixed Deposit IN (DVP)	347,030	2,260,761
46,864,775			**39,673,459**	**46,864,775**			**39,673,459**

Auditor's Report

Significant Accounting Policies (As per Schedule 'B')

FOR S.D. PANDEY & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS
FRM NO. 002669C

(RAJIV PANDEY)
PARTNER
M. NO. 71731
PLACE: JAIPUR
DATED: 23/12/2020

S.D. PANDEY & CO. AUDITED JAIPUR

FOR DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHELKUD SAMITI

TREASURER **SECRETARY** **PRESIDENT**

DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHELKUD SAMITI, JAIPUR

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH 2020

Core Programme as on 31.03.19	FCRA as on 31.03.2019		EXPENDITURE	Core Proramme as on 31.03.2020	FCRA as on 31.03.2020	TOTAL
6058916	2320112	To	Salaries	8,087,214	1,380,584	9,467,798
391310			Honorarium	1,244,222	-	1,244,222
28697	41105		Leave enceshment	3,039	-	3,039
10858			Staff Selection & Team Building	36,824	-	36,824
119873			Postage & Telephone	114,412	-	114,412
47450			Legal/Professional Consultancy fee	263,800	-	263,800
458167			Electricity Exp.	567,977	-	567,977
40000			Audit Fees	40,000	-	40,000
194733			Foundation Course	88,041	-	88,041
732636			Printing & publication	258,615	-	258,615
55044	15866		Study material	32,226	-	32,226
405881			Repair & Maintenance	449,873	-	449,873
19930			Stationery Exp.	20,624	-	20,624
65950			Travel & Local conveyance	31,142	-	31,142
485594			Children Transportation Expenses	450,709		450,709
227419			Stipend And Transportion Exp	210,000	-	210,000
37950			School Activities & Others	17,888		17,888
236	1152		Bank Charges	384	266	649
1281886	17935		Depreciation	1,214,499	16,602	1,231,101
65577			Office Maint. Exp.	22,722	-	22,722
2020			School Registration	2,151		2,151
58370			Skill Development	24,315		24,315
16438			Campus & Vidyalay Pet Exp.	18,427		18,427
6973			E.C./G.B. Meeting Exp.	8,522		8,522
3400			Other Exp. Vimarsh	5,520		5,520
72101			Pedaogy Workshop Part Boarding	1,621,403		1,621,403
	2464257		Transfer to Balance Sheet (Surplus)		(1,334,307)	(1,334,307)
10887409	**4860427**			**14,834,546**	**63,145**	**14,897,691**

AUDITORS REPORT

SIGNED IN TERMS OF OUR REPORT OF EVEN DATE ANNEXED

FOR S.D. PANDEY & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS
FRM NO. 002669C

(RAJIV PANDEY)
PARTNER
M. No. 71731

S.D. PANDEY & CO. AUDITED JAIPUR

PLACE: JAIPUR
DATED: 23/12/2020

FOR DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHELKUD SAMITI

TREASURER **SECRETARY** **PRESIDENT**

DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHELKUD SAMITI, JAIPUR

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH 2020

Core Programme as on 31.03.2019	FCRA as on 31.03.2019		INCOME		Core Proramme	FCRA	TOTAL
		By	Grant From Unicef	1,031,300			
143458	4600000		Add. : Unspent Grant as per last year	-			
				-	1,031,300	-	1,031,300
1041438			Grant in Foe (Wipro Foundation)	2,321,344			
261184			Add: Unspent Grant as per last Year				
1302622							
				2,321,344			
				-	2,321,344		2,321,344
3936000			Directorate Education Haryana	3,863,899			
3863899			Less: Unspent Balance				
72101							
			Add: Unspent Grant as per last Year		3,863,899		3,863,899
			Less: Unspent balance refund to	-		-	-
			Interest on FCRA		-	-	-
			Vimarsh Advertising		36,000		36,000
152434	101317		Bank Interest		119,353	63,145	182,498
342048			Interest on Fixed Deposit		375,941		375,941
196361			Teaching Material Disposal		253,757		253,757
48000			Hostel Rent		58,000		58,000
1256720	159410		Donation		927,430		927,430
154500			Institutional Fee		116,300		116,300
1140346			Boarding, Lodging & Training Charge		1,657,217		1,657,217
240000			Annual Fee		189000		189,000
554750			Travel and Local conveyance		577,800		577,800
0			Liabary missing book		794		794
2500			Infrastural chargeg		10,000		10,000
1888			Interest on TDS Refund		-		-
0			Vimarsh Subscription		287,869		
3110			Othar Income		211,870		211,870
469026			Closing Stock of books		375,627		375,627
-4807546			Transfer to Balance Sheet (deficit)		(2,421,045)		(2,421,045)
1272318	**4860727**		**Total**		**9,992,455**	**63,145**	**9,767,731**

CONTD.

DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHEL KUD SAMITI, JAIPUR
Schedules annexed to and forming part of the Balance Sheet as at 31.3.2020

	SCHEDULE A: FIXED ASSETS					Total As	Dep.		Dep. For
	Particulars	W. D. V. as On 1.4.19	Addition		Sales / Disposed	on 31.3.20	Rate	the year	W.D.V. as On 31.3.20
			Before	After					
1	**H. O. Assets**								
	Land	90,060	-	-		90,060	Nil	-	90,060
	Building Hospital	59,441	-	-		59,441	2.50	1,486	57,955
	Coolars & Fans	79,028	42,950	-		121,978	10.00	12,198	109,780
	Cycle	331	-	-		331	10.00	33	298
	EERC Building	1,615,453	8,774	21,385		1,645,612	2.50	40,873	1,604,739
	Fan at EERC	1,835	-	-		1,835	10.00	184	1,652
	Fan at Hospital	183	-	-		183	10.00	18	165
	Furniture & Bedding	52,880	-	12,740		65,620	10.00	5,925	59,695
	Hand pump	2,102	-	-		2,102	10.00	210	1,892
	Hospital Equipment	17,786	-	-		17,786	Nil	-	17,786
	Mess Equipment	41,787				41,787	10.00	4,179	37 608
	Office Equipment	2,241	-	-		2,241	10.00	224	2,017
	P.C. Printer	10,737	-	-		10,737	10.00	1,074	9,663
	Photo Copier	4,792	-	-		4,792	10.00	479	4,313
	Refrigerator	730	-	-		730	10.00	73	657
	TV. V.C.R.	2,564	-	-		2,564	10.00	256	2,308
	Type writer	147	-	-		147	10.00	15	132
	Electric equipment	67,059	-			67,059	10.00	6,706	60,353
	Fire Fighting equipment	3,054	-	-		3,054	10.00	305	2,749
	Building	252,281	-	-		252,281	2.50	6,307	245,974
	Tube Well	47,035	-	-		47,035	Nil	-	47,035
	School Land	1,616,996	-	-		1,616,996	Nil	-	1,616,996
	Solar Hot Water System	23,062	-	-		23,062	10.00	2,306	20,756
2	**School Assets**							-	
	Fans	4,744	-	-		4,744	10.00	474	4,270
	Furniture & Off. Equip.	31,337	-	-		31,337	10.00	3,134	28,203
	Science laboratory	1,390	-	-		1,390	10.00	139	1,251
	Tape Recorder	377	-	-		377	10.00	38	339
3	**Shaj Shiksha Project**							-	
	Furniture	2,563	-	-		2,563	10.00	256	2,307
	Computer & printer	10,486	-	-		10,486	10.00	1,049	9,437
4	**SIR RATAN TATA PROJECT**							-	
	Office Furniture	944	-	-		944	10.00	94	850
	Hand Pump	3,269	-	-		3,269	10.00	327	2,942
	Building	56,648	-	-		56,648	2.50	1,416	55,232
5	**Room to Read Prog.**							-	
	Office Furniture	3,941	-	-		3,941	10.00	394	3,547
6	**ICICI CORE PROGRAMME**							-	
	AEEP Primary							-	
	Building Aug. Primary	303,070	-	-		303,070	2.50	7,577	295,493
	Furniture & School equ. Primary	90,473	-	-		90,473	10.00	9,047	81,426
	Building	1,968,575				1,968,575	2.50	49,214	1,919,361
	Library Books Primary	22,133	-	-		22,133	10.00	2,213	19,920
	Laboratory	8,645	-	-		8,645	10.00	865	7,781
7	**AEEP UP**								
	Library Aeep Up	17,589	-	-		17,589	10.00	1,759	15,830
	Furniture & School equ.	28,346	-	-		28,346	10.00	2,835	25,511

PANDEY & CO AUDITED JAIPUR

8	**TRSU**								
	Computer S&AU	130,662	-			130,662	10.00	13,066	117,596
	Furniture S&AU	78,719	-			78,719	10.00	7,872	70,847
	Office Aug. S&AU	110,011	-	-		110,011	10.00	11,001	99,010
	Printer With copier S& AU	6,044	-	-		6,044	10.00	604	5,440
	Telepphone,EPABX, FAX & AU	46,276		-		46,276	10.00	4,628	41,648
	Cell Phone Instrument	2,012	-	-		2,012	10.00	201	1,811
9	**TARU**							-	
	Equipment Taru	358,703	5,722	-		364,425	10.00	36,443	327,983
	Library Taru	316,168	-	-		316,168	10.00	31,617	284,551
	Furniture Taru	199,706	-	-		199,706	10.00	19,971	179,735
	Computer Taru	54,936	-	-		54,936	10.00	5,494	49,442
	Infrastructure & Building Taru	84,044	8,500	-		92,544	10.00	9,254	83,290
10	**Vimarash**							-	
	Furniture Vimarsh	1,957	-	-		1,957	10.00	196	1,761
	Computer & Accessories Vimarsh	140,733		-		140,733	10.00	14,073	126,660
11	**Digantar CPG Prog.**	-						-	
	Equipment	33,334	-	-		33,334	10.00	3,333	30,001
12	**Shiksha Samarthan**							-	
	Furniture & Equipment(Cluster)	105,346	-	-		105,346	10.00	10,535	94,811
	Furniture & Equipment(Office)	104,261	-	-		104,261	10.00	10,426	93,835
	Teaches Resource Liabary(CRC)	21,793	-	-		21,793	10.00	2,179	19,614
	Teaches Resource Liabary(Office)	31,475	-	-		31,475	10.00	3,148	28,328
13	**Digantar Baran Prog.**							-	
	Inf. Supp. To DITE/BRC	130,384	-	-		130,384	10.00	13,038	117,346
	Computer	68,403	-	-		68,403	10.00	6,840	61,563
	Inf. Of RSA office	29,077	-	-		29,077	10.00	2,908	26,169
	Inverter	5,935	-	-		5,935	10.00	594	5,342
	Lib. For QIU	32,959	-	-		32,959	10.00	3,296	29,663
	Cluster level Lib. Supp.	15,763	-	-		15,763	10.00	1,576	14,187
14	**Digantar SDTT Prog.**							-	
	Teachers Resource Lib.(Blo. Off)	35,284	-	-		35,284	10.00	3,528	31,756
	Teachers Resource Lib.(Pro.Off)	23,528	-	-		23,528	10.00	2,353	21,175
	Computer (B.O.)	9,315	-	-		9,315	10.00	932	8,384
	Computer (Pro. Off.)	28,472	-	-	22,950	5,522	10.00	552	4,970
	Equipment for B.O.	51,368	-	-		51,368	10.00	5,137	46,231
	Equipment for B.O.	45,626	-	-		45,626	10.00	4,563	41,063
	Equipment for R.S.	47,669	-	-		47,669	10.00	4,767	42,902
15	**Digantar Literacy Research Prog.**							-	
	Epbx(Res. Proj)	5,710	-	-		5,710	10.00	571	5,139
	Equipment (Res. Proj)	94,439	-	-		94,439	10.00	9,444	84,995
16	***Digantar Vidyalay Programme***							-	
	Lease Of Land	839,559		-		839,559	0.00	-	839,559
	Construction of DVP	4,780,791	-			4,780,791	2.50	119,520	4,661,271
	Modification of Existing Buildg	833,733	-	-		833,733	2.50	20,843	812,890
	Boundary Wall Sports Mat.	1,440,704	-	-		1,440,704	2.50	36,018	1,404,686
	Computers & Printers	382,496	-	-		382,496	10.00	38,250	344,246
	Furniture	116,987				116,987	10.00	11,699	105,288
	Laboratory	54,428	-	-		54,428	10.00	5,443	48,985
	School Equipment	196,328		16,800	3,800	209,328	10.00	20,473	188,855
	Library Books	47,882				47,882	10.00	4,788	43,094
	Art & Musical Instriuments	84,119	-	-		84,119	10.00	8,412	75,707
	Four Wheel Vehicle(Bolaro)	345,794	-	-		345,794	10.00	34,579	311,215
	Service fess for Aechitech	42,953	-	-		42,953	2.50	1,074	41,879
	JDA Approval & Regu.	6,443	-	-		6,443	2.50	161	6,282

S.D. PANDEY & CO. AUDITED JAIPUR

17	**Digantar PHF Programme**							-	
	Laptops & Computers	49,291	-	-		49,291	10.00	4,929	44,362
18	**ASED Programme**							-	
	School Bus	1,402,414	-	-		1,402,414	10.00	140,241	1,262,173
	Building(Toilet construction)	1,334,527				1,334,527	2.50	33,363	1,301,164
	Water Treatment Plant & Cooler	108,385		-		108,385	10.00	10,839	97,547
	Furniture & Equipment	57,830	-	-		57,830	10.00	5,783	52,047
	library furniture	102,240	-	-		102,240	10.00	10,224	92,016
	Activities Centre Building	9,653,068	-		-	9,653,068	2.50	241,327	9,411,741
19	**TEP Phagi**							-	
	Equipment	102,453				102,453	10.00	10,245	92,208
20	School Play Ground (out of corpus)	1,443,436				1,443,436	2.50	36,086	1,407,350
21	Rajiv Gandhi Liabrary Book (out of corpus)	106,195				106,195	10.00	10,620	95,576
22	Activite Center Open Theater	239,294				239,294	2.50	5,982	233.312
22	**SKILL DEVELOPMENT**								
	Carpentry	35,029		-		35,029	10.00	3,503	31,526
	HD led tv	40,185				40,185	10.00	4,019	36,167
	plumbing	8,119		-		8,119	10.00	812	7,307
	sewing	40,500	-			40,500	10.00	4,050	36,450
		32,891,406	**65,946**	**50,925**	**26,750**	**32,981,521**		**1,231,104**	**31,750,428**

FOR S.D. PANDEY & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS
FRM NO. 02669C

(RAJIV PANDEY)
PARTNER
M. No.71731

PLACE: JAIPUR
DATED: 23/12/2020

FOR DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHELKUD SAMITI

TREASURER **SECRETARY** **PRESIDENT**

fnxUrj

f’k{kk ,o [kydn lfefr

VkMh jetkuhijk] [kk ukxkfj;ku jkM

txrijk] t;ij&302017 jktLFkku

lid % 0141&2750310